सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि	
एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेरा से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2016 | वर्ष 15 | अंक 01

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत

तुमको दौलत हमको नबी की महब्बत मुबारक हो
तुमको मंसब हमको नबी की ताअ़त मुबारक हो
दौलतो मंसब से हम को नहीं नफ़रत
लेकिन हुब्बो ताअ़ते नबी बिन सब अकारत
है शरफ सुन्नते गिरामी में
है शरफ आप की गुलामी में
जो कोई पैरवे रसूल नहीं
लाख ताअ़त करे क़बूल नहीं
पढ़ें दुरूद नबी पर और सलाम
सुनें जब या लें नबी का नाम
सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
सच्चा राही पन्द्रहवें वर्ष में	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	07
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
दीन (इस्लाम) का	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	16
हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	17
जिक्रे पयम्बर या यादे	मौ0 अब्दुल माजिद दरियाबादी रह0	20
वास्तविक सफलता की प्राप्ति	मुहम्मद फरमान नदवी	22
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	28
एलाने मिलकियत व अन्य	इदारा	31
इन्सान की पैदाईश के विभिन्न	ई0 जावेद इक़बाल	32
हमारे लिए नबी सल्ल0 का	मौलाना शमसुल हक़ नदवी	35
पढ़ें सच्चा राही (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	37
पग–पग ये प्रेम पुष्प	कमर रामनगरी	38
शुभ सूचना	इदारा	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरान:

अनुवाद- ऐ हमारे पालनहार! बेशक तू लोगों को एक ऐसे दिन एकत्रित करने वाला है जिसमें कोई संदेह नहीं निःसंदेह अल्लाह किये गए वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता(9) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र (इनकार) किया न उनके माल उनको अल्लाह से बचाने के लिए कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद, और वही लोग दोज़ख़ का ईंधन होंगे[1](10) फिरऔन वालों और उनसे पहले वालों के हाल की तरह उन्होंने हमारी निशानियां झुठलाई तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उनकी पकड़ की और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है(11) आप कुफ़्र करने वालों से कह दीजिए कि जल्द ही तुम हार जाओगे और तुम्हें दोज़ख़ में एकत्र किया जाएगा और वह कैसा बुरा ठिकाना है[2](12) उन दो सेनाओं में तुम्हारे लिए निशानी है जिनमें मुठभेड़ हुई एक सेना अल्लाह के रास्ते में लड़ रही थी और दूसरी (खुदा का) इनकार करने वाली थी वे खुली आंखों दूसरों को अपने से दो गुना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताक़त पहुंचाता है बेशक इसमें निगाह रखने वालों के लिए ज़रूर सबक़ (इबरत) है[3](13) लोगों के लिए इच्छाओं के प्रति प्रेम सुन्दर कर दिया गया है औरतों की और बच्चों की और ढेरों—ढेर सोने व चांदी की और निशान लगे हुए घोड़ों और पशुओं और खेती की, यह दुन्यावी जीवन से आनंद लेने के कुछ साधन हैं और सबसे अच्छा ठिका‑ केवल अल्लाह ही के पास है[4](14) आप कह दीजिए कि क्या मैं तुमको इससे बेहतर न बता दूं? उनके लिए जो तक़्वा अपनाते हैं, उनके रब के पास वे बाग़ हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं, वे हमेशा उसी में रहेंगे और साफ़ सुथरी पत्नियां हैं और अल्लाह तआला की ओर से रज़ामंदी का परवाना है और अल्लाह अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है(15) जो कहते हैं ऐ हमारे पालनहार! बेशक हम ईमान लाए बस तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले(16) (यह हैं) सब्र करने वाले, सच्चाई के आदी, बंदगी में लगे रहने वाले, ख़र्च करने वाले और पिछले पहरों में गुनाहों की माफ़ी मांगने वाले[5](17) अल्लाह ने खुद इस बात की गवाही दी कि उसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं और फरिश्तों ने और इल्म वालों ने भी, वही इंसाफ़ के साथ सब व्यवस्था संभाले हुए हैं उस ज़बरदस्त, हिकमत वाले के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं[6](18)

बेशक दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक केवल इस्लाम ही है और अहल–ए–किताब (आसमानी किताब वालों) ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद जो झगड़ा किया वह केवल आपस की ज़िद में किया, और जो अल्लाह की निशानियां झुठलाता है तो बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है(19) फिर भी अगर वे आपसे हुज्जत करें तो आप कह दीजिए मैंने और मेरी बात मानने वालों ने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है और आप उन लोगों से जिनको किताब दी गई और अनपढ़ लोगों से पूछिये क्या तुम भी अपने आपको अल्लाह के हवाले करते हो? बस अगर उन्होंने हवाले कर दिया तो उन्होंने राह पा ली और अगर फिर गए तो आपका काम तो पहुंचा देना है और अल्लाह अपने बंदों को ख़ूब देख रहा है(20) बेशक जो लोग अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हैं और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते रहे हैं और उन लोगों का क़त्ल करते रहे हैं जो लोगों में न्याय की ताकीद करते थे तो आप उनको दुःखद यातना की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए(21) ये वे लोग हैं कि दुन्या और आख़िरत में उनके सब काम बेकार गए और उनका कोई मदद करने वाला न होगा[7](22)।

तफ़सीर (व्याख्या):–

1.नजरान का उपरोक्त प्रतिनिधि मण्डल मदीना रवाना हुआ तो उनके सबसे बड़े पादरी के खच्चर ने ठोकर खाई, उसके भाई ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में अपशब्द कहे, इस पर पादरी ने डांटा और कहा यही वे नबी हैं जिनका इन्तेज़ार था, भाई बोला फिर मानते क्यों नहीं वह बोला ईसाई राजाओं ने हमें बड़ा धन और सम्मान दिया है, अगर हमने मुहम्मद को माना तो सब हमसे छिन जाएगा, भाई के दिल में यह बात उतर गई और बाद में यही चीज़ उसके इस्लाम लाने का कारण बनी इस आयत में उस पादरी का जवाब भी है ।

2. दुन्या में हार जीत लगी है लेकिन आख़िरत में हार ही अल्लाह का इन्कार करने वालों का क़िस्मत है बस फिर उनका ठिकाना जहन्नम ही है।

3. यह ग़ज़्व–ए–बद्र का हाल बयान हुआ, विवरण सूरः अन्फ़ाल में आएगा, मुश्रिकों की संख्या हज़ार से ऊपर थी और मुसलमान केवल तीन सौ तेरह थे लेकिन अल्लाह ने फरिश्तों की सेना भेजी, काफ़िरों को दिखता था कि मुसलमानों की सेना दुगनी है, इससे वे भयभीत हो गए और मुसलमानों को भी काफ़िरों की सेना दोगुनी लगती थी जबकि वह तीन गुना थी मगर मुसलमान अल्लाह से विजय की आशा रखते थे अंततः यही हुआ।

4. इन चीज़ों में फंस कर आदमी ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाता है लेकिन अगर इन चीज़ों के साथ यही प्रयोग हो तो बुरा नहीं है।

5. इन गुणों को अपनाने वालों को अल्लाह तआला वह

शेष पृष्ठ ......06...पर...

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

फर्ज नमाजों के बाद के अवरादो अजकार:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो आदमी हर फर्ज नमाज के बाद 33 बार सुब्हानल्लाहि, 33 बार अलहमदुलिल्लाहि, 33 बार अल्लाहु अकबर पढ़े और एक बार "ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहू, लहुल मुल्कू वलहुल हम्दु व हुआ अला कुल्लि शैइन क़दीर" पढ़ कर सौ पूरे कर दे तो यदि समंदर के झाग के बराबर भी उसने गलतियां की हैं तो भी माफ हो जायेंगी। (मुस्लिम शरीफ)।

हज़रत कअ़ब इब्ने उ़जरः रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह आदमी कामयाब हो गया जिसने हर फर्ज नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाहि, 33 बार अलहमदुलिल्लाहि, और 34 बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्कास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर फर्ज नमाज़ के बाद इन कलिमात के साथ पनाह मांगते थे "ऐ अल्लाह मैं बुज़दिली और बुखल से तेरी पनाह चाहता हूं, और निकम्मी उम्र अर्थात जब शरीर के अंग अंग बेकाम हो जायें, की ओर पलटाये जाने से पनाह मांगता हूँ, और दुन्या और क़ब्र के फितनों से पनाह मांगता हूँ।

(बुखारी शरीफ)

हज़रत मुआ़ज रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फरमाया ऐ मुआ़ज खुदा की क़सम मुझे तुम से महब्बत है, फिर फरमाया ऐ मुआ़ज़ मैं तुम को वसीयत करता हूं कि हर नमाज के बाद इन कलिमात को कहना और कभी न छोड़ना, और यह पढ़ना ऐ हमारे परवरदिगार हमारी मदद फरमा अपने ज़िक्र और अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत पर।

(अबू दाऊद शरीफ)

रुकूअ और सजदों के अजकार:-

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ़ और सजदे में यह कलिमात बहुत ज़ियादा कहते थे, "सुब्हान कल्ला हुम्मा रब्बना व बिहम्दिक, अल्लाहुम्म इग्फिरली" ऐ अल्लाह तू पाक है ऐ हमारे परवर दिगार हम तेरी पाकी बयान करते हैं तेरी तारीफ के साथ ऐ अल्लाह मुझ को बख्श दे।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ़ और सजदों में सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रुह

कहा करते थे। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रुकूअ में अपने रब की अजमत बयान करो और सजदे में दुआयें मांगो, यक़ीन है कि तुम्हारी दुआयें कबूल हो जायें।

(मुस्लिम शरीफ)

सजदे में आप सल्ल० की दुआयें:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सजदे की हालत में बन्दा अपने परवरदिगार से बहुत ही क़रीब होता है, इसलिए सजदे में दुआयें मांगा करो। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सजदे में यह दुआ पढ़ा करते थे, अनुवादः ऐ अल्लाह मेरे छोटे बड़े, अगले पिछले, जाहिर व पोशीदा तमाम गुनाहों को बख्श दे। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न पाया तो मैं तलाश करने लगी, अचानक क्या देखा कि आप रुकूअ़ या सजदे में हैं और यह फरमा रहे हैं "सुब्हानक व बिहमदिक लाइलाह इल्ला अन्ता" और एक रिवायत में है कि मेरा हाथ आपके कदमों पर पड़ा आप सजदे में थे आपके दोनों क़दम खड़े हुए थे और यह दुआ पढ़ रहे थे, अनुवादः ऐ अल्लाह! मैं तेरी रजामंदी के साथ तेरे गुस्से से पनाह मांगता हूं और तेरी आफियत के साथ तेरे अज़ाब से पनाह मांगता हूं और मैं तेरी तारीफ को गिन नहीं सकता, बस तूने जैसी अपनी जात की तारीफ की है वैसा ही है। (मुस्लिम शरीफ)

❖❖❖

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

उपकार करेंगे जिनका बयान इससे पहली वाली आयत में हो चुका।

6. ब्रह्माण्ड की व्यवस्था जो न्याय व संतुलन के साथ क़ायम है वह गवाह हैं फरिश्ते गवाह हैं, ज्ञान वाले यानी नबी (संदेष्टा) और उनकी बात पर चलने वाले गवाह हैं।

7. सच्चा दीन (धर्म) शुरु से इस्लाम ही था फिर लोगों ने अपने फ़ायदे के लिए तरह–तरह की बातें निकालीं और केवल आपस की ज़िद से मतभेद पैदा किए, आपका काम केवल पहुंचा देना है और बता देना है कि हम उसी दीन पर क़ायम हैं फिर जिन्होंने पहले भी झुठलाया और नबियों को क़त्ल किया, ईमान न होने की वजह से उनके सब काम बेकार गए और आख़िरत में उनको हक़ीकत मालूम हो जाएगी जहां उनका कोई मददगार न होगा।

❖❖❖

—प्रस्तुति—
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

सच्चा राही पन्द्रहवें वर्ष में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस अंक पर सच्चा राही पन्द्रहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, बीते दिन स्वप्न से लगते हैं, लगता है कल ही की तो बात है जब 2001 की मजलिसे सहाफत की मीटिंग मेहमान खाने में हुई थी, हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी नाजिम नदवतुल उलमा जो मजलिसे सहाफत व नशरियात के भी सद्र (अध्यक्ष) हैं, मैं भी मजलिसे सहाफत के सदस्य के नाते मीटिंग में उपस्थित था, अध्यक्ष महोदय ने फरमाया था कि एक अरबी मासिक पत्रिका "अलबअ़स" यहां से प्रकाशित होती है, दूसरी अरबिक अर्ध मासिक पत्रिका "अर्राइद" भी प्रकाशित होती है। उर्दू अर्ध मासिक पत्रिका तामीरे हयात प्रकाशित होती है तथा अंग्रेज़ी में "फ्रेगरेंस" मासिक पत्रिका भी निकलती है।

आवश्यकता है कि यहां से हिन्दी पत्रिका भी प्रकाशित हो, सारे सदस्यों ने एक मत हो कर समर्थन किया, और उसी समय उसके उत्तरदायी जनाब मास्टर अतहर हुसैन साहब नियुक्त हुए, हजरत मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी मुअ़तमद तालीम ने मुझ अयोग्य का नाम सम्पादक के लिए प्रस्तावित किया। जो बिना विरोध के पारित हो गया, मैं अपनी जगह पर घबराया कि मैं तो उर्दू का डॉक्टर हूं, अरबी भी आती है, हिन्दी का सम्पादन कैसे संभालूंगा, परन्तु विरोध कैसे कर सकता था मुझे उस समय फारसी का एक शेअ़र याद आ गया।

अनुवादः उसकी देन को योग्यता की शर्त नहीं बल्कि जिसे वह प्रदान करे वही योग्य है।

ध्यान इस ओर गया कि कोई काम अल्लाह के निर्णय बिना नहीं होता, अल्लाह का आदेश हुआ कि मैं यह काम करूं, तभी तो हमारे हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी महोदय ने मेरा नाम प्रस्तुत किया और सदस्यों तथा अध्यक्ष ने स्वीकृत प्रदान की, इससे ज्ञात हुआ कि मैं यह कार्य कर सकूंगा "सच्चा राही" पत्रिका का नाम प्रस्तावित हुआ सरकारी तौर पर स्वीकृत प्राप्त की गई मुझे दो योग्य सहायक दिये गये। एक मास्टर मुहम्मद हसन अन्सारी दूसरे मास्टर हबीबुल्लाह आजमी, वह दोनों महापुरुष अल्लाह की रहमत में जा चुके अल्लाह उनकी मग़फिरत फरमाए उन दोनों से मुझे भरपूर सहयोग भी मिला और उनसे मैंने बहुत कुछ सीखा भी, जनाब मुहम्मद हसन अन्सारी साहिब तो हिन्दी भाषा के ज्ञाता थे। मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुफ़रान नदवी साहिब को जब मजलिसे तहक़ीक़ात से दावत व इर्शाद विभाग का इंचार्ज और नदवे की ओर से मकातिबे शहर लखनऊ का

नाजिर बना कर लाया गया तो मेरे अनुरोध पर उनको भी मेरा सहायक बना दिया गया।

दो वर्षों पीछे मेरी दोनों आंखों का आगे पीछे मोतिया बिन्द का आप्रेशन हुआ तो अल्लाह की मर्जी मेरी दोनों आंखों का रेटीना प्रभावित हो गया और मेरी निगाह इतनी गिरी कि मैं पढ़ने में असमर्थ हो गया, अलबत्ता लिख लेता हूं, पंक्तियां दिखती हैं शब्द दिखते हैं परन्तु अक्षर पहचान में नहीं आते, अल्लाह का शुक्र है कि मेरा लिखा मेरे प्रिय कम्पोजीटर जनाब क़मरुज्जमां साहिब पढ़ लेते हैं। ऐसे में जनाब मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुफ़रान साहिब नदवी से मुझे बड़ी मदद मिलती है विशेष कर शब्दों के उच्चारण तथा अर्थ के लिए शब्दकोश देखने में, मौलाना कभी कभार किसी उर्दू गद्य अथवा पद्य की हिन्दी लिपी भी प्रस्तुत कर देते हैं, सच्चा राही में मौलाना का एक शीर्षक लम्बे समय से चल रहा है जो अब अन्त के निकट वह है "जग नायक" वास्तव में यह मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी महोदय की प्रसिद्ध पुस्तक "रहबरे इन्सानियत" का अनुवाद है, यह अनुवाद मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी ही के क़लम से है और यह छप चुका है जो "मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम" नदवतुलउलमा, लखनऊ से प्राप्त किया जा सकता है।

अपनी निगाह की कमज़ोरी के कारण "सच्चा राही" की सेटिंग उसके बाज़ लेखों को उर्दू से हिन्दी लिपि में लाने तथा कम्पोज किये हुए अधिकांश लेखों को पढ़ कर सुनाने तथा करेक्शन करने में इसी विभाग के एक कर्मचारी जनाब हुसैन अहमद से बड़ी मदद मिलती है।

प्रूफ रीडिंग में जनाब मौलाना जमाल अहमद नदवी से सहयोग मिलता है वह बड़ी लगन से प्रूफ रीडिंग करते हैं, बाज उर्दू लेखों का हिन्दी अनुवाद भी कर देते हैं, "कुर्आन की शिक्षा" तथा "प्यारे नबी की प्यारी बातें" तो वह बराबर उर्दू से हिन्दी अनुवाद करके सच्चा राही को देते हैं, उनका मुख्य कार्य दावत व इर्शाद विभाग के दीहात के मदरसों का निरीक्षण करना है।

सच्चा राही की छपाई की ज़िम्मेदारी मजलिसे सहाफत व नशरियात के इंचार्ज जनाब मौलाना नियाज अहमद नदवी लिए हुए हैं, जब कि पैकिंग का काम तामीरे हयात के अमले के लोग जनाब मौलवी मुबीनुद्दीन साहिब नदवी, जनाब मंजर सुब्हानी और अ़जीजी अरशद मियां करते हैं, पोस्टिंग का काम अरशद मियां अंजाम देते हैं, अल्लाह तआला तमाम सहयोगियों को भरपूर बदल प्रदान करे, आमीन।

अल्लाह का शुक्र है जिन बुजुर्गों ने मुझे इस काम के लिए चुना था उनकी दुआओं से चौदह वर्ष पूरे कर दिये अब पन्द्रहवें वर्ष अल्लाह तआला जिससे चाहेंगे उससे काम लेंगे।

इस हिन्दी पत्रिका

"सच्चा राही" के प्रकाशन का उद्देश्य यह था कि जिस प्रकार "तामीरे हयात" समाज को उर्दू में दीनी जानकारी देता है उसी प्रकार "सच्चा राही" हिन्दी भाषा में समाज को दीनी व अख़्लाक़ी बातें पहुंचाए, इसमें हम कितने सफल रहे इसका फैसला तो हमारे प्रिय पाठक ही करेंगे।

हमारी यह पत्रिका कुछ वतनी भाई भी पढ़ते हैं परन्तु 99 प्रतिशत इसके पढ़ने वाले मुसलमान हैं, आजकल अधिकांश मुस्लिम नव युवक उर्दू से अपरिचित हैं, हिन्दी लिखना पढ़ना जानते हैं, परन्तु उनके घरों की सक़ाफत (संस्कृति) उर्दू है, वह घरों में माता पिता नहीं बोलते अब्बा अम्मी बोलते हैं, वह जलपान नहीं करते नाश्ता करते हैं वह भोजन नहीं करते खाना खाते हैं, आपस में मिलते हैं तो अस्सलामु अ़लैकुम कहते हैं, जवाब में व अलैकुमुस्सलाम कहते हैं, वह क्षेम कुशल नहीं पूछते ख़ैर व आफियत पूछते हैं, कोई भली चीज़ देखते हैं तो माशा अल्लाह कहते हैं, खुश होते हैं तो अलहम्दुलिल्लाह कहते हैं, दुख की सूचना पर इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहते हैं, तात्पर्य यह कि उनका घरेलू माहौल उर्दू सकाफत का है अतः "सच्चा राही" की भाषा उर्दू सक़ाफत के साथ अपनाई गई, अलबत्ता दूसरे लेखकों के लेख ठेठ हिन्दी में आने लगे और वह उसी दशा में प्रकाशित हुए, इस पर कई पाठकों ने पत्र लिखे कि आपकी भाषा समझ में नहीं आ रही है इसके लिए बार बार एलान (घोषणा) प्रकाशित किया गया कि लेखक महोदय सरल, स्पष्ट तथा लाभदायक लिखें उसका अच्छा प्रभाव पड़ा और लोग सरल लिखने लगे।

इसी प्रकार उर्दू लेखकों के लेख हिन्दी लिपि में प्रकाशित होते रहे। खुद मुझे भी इसका आभास हुआ और पाठकों के पत्र आए कि उर्दू के बहुत से शब्द समझ में नहीं आते तथा परामर्श दिया गया कि लेख के अन्त में कठिन शब्दों के अर्थ लिख दिये जाएं तो लेख समझने में आसानी हो, इस परामर्श को स्वीकार किया गया और उलमा का जो लेख हिन्दी लिपि में प्रकाशित किये जाते हैं उनके अन्त में कठिन शब्दों के अर्थ लिखे जाने का मामूल चल रहा है।

"सच्चा राही" का एक शीर्षक "आपके प्रश्नों के उत्तर" चल रहा है जो बहुत पसन्द किया जा रहा है मगर उसमें मुफ़्ती की भाषा होती है उसका बदलना ठीक नहीं लगता, फिर मुसलमान उसे आसानी से समझ भी लेते हैं। सच्चा राही में सांसारिक जानकारी के लेख भी प्रकाशित किये जाते हैं जैसे भौगोलिक, वैज्ञानिक आदि सबमें प्रयास यही रहता है कि हमारे पाठक अपने विधाता, निर्माता को न भूलें।

अंत में हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वह सच्चा राही के ख़रीदार बढ़ा कर सवाब कमाएं, अपने रहन सहन तथा आचरण से इस्लाम

शेष पृष्ठ ....34...पर..

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

दूसरे कुछ अहम सहाब-ए-किराम रजिअल्लाहु अन्हुम

हज़रत हमज़ा बिन अबदिल मुत्तलिब रज़िअल्लाहु अन्हु-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा की औलाद में दो हज़रात को इस्लाम लाने की इज़्ज़त हासिल हुई। उनमें से एक हज़रत हमज़ा हैं, जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिल जाने के समय जवान और बड़े साहस वाले थे, उनकी दृढ़ता, साहस और ख़ानदानी उच्चता का मक्के में चर्चा था और यह चीज़ उनके रोबदाब की वजह से थी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ भतीजा होने के रिश्ते से हमदर्दी रखते थे। अतः एक अवसर पर अबू जहल जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे बड़ा विरोधी शख्स था और उसे ख़ानदाने कुरैश में बड़ा सम्मान और ऊँचा स्थान प्राप्त था। उसने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत कष्ट पहुंचाया और तकलीफ दी। हज़रत हमज़ा शिकार से वापस आ रहे थे तो उनको इस बात का पता चला उनको गुस्सा आया, उन्होंने अबू जहल की ख़बर ली और चैलेन्ज किया और इसी जोश व हमदर्दी में इस्लाम भी कुबूल कर लिया और अपने इस्लाम का ऐलान कर दिया, जिसके असर से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ताक़त हासिल हुई। उसके बाद से हज़रत हमज़ा रज़ि0 बराबर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शरीक रहे और मदद व सहयोग करते रहे। ग़ज़व-ए-उहद में धोका देकर उनको शहीद किया गया, जिससे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़े रंज व नुक़सान का एहसास हुआ और अपने महब्बत और हमदर्दी करने वाले रिश्तेदार की कमी महसूस की।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि0 एक बड़े मरतबे के सहाबिए रसूल थे। वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए जिसके परिणामस्वरूप उनको आराम व सुख वाली ज़िन्दगी छोड़नी पड़ी और उन्हें बहुमूल्य वस्त्र और अच्छा खाना भी छोड़ना पड़ा जो उनको अपने माँ बाप के साथ रहने की सूरत में प्राप्त था। अतः माँ बाप भी छूट गये। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पूरी महब्बत और जांनिसारी के साथ हो गए और जब मदीने में ईमान का माहौल बन गया और जब वहां दीनी शिक्षा की ज़रूरत महसूस की गयी तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आप ही को वहां उस्ताज़ और दाई बना कर भेजा। उन्होंने पूरा आज्ञा पालन

किया और बड़ी मेहनत और हिकमत से दावत का काम अंजाम दिया। यहां तक कि साल भर में मदीने के अधिकांश लोग इस्लाम में दाखिल हो गए और वह इस कारनामे और ईमान व संयम के साथ जीवन व्यतीत करते हुए ग़ज़वए उहद में मुजाहिद की हैसियत से शरीक हुए और उसमें शहीद हुए। उस समय भी उनकी निर्धनता का यह हाल था कि कफ़न तक के लिए उनके पास पूरा कपड़ा न था सिर्फ एक कंबल था कि सर छुपाया जाता तो पैर खुल जाते और पैर छुपाए जाते तो सर खुल जाता। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सर ढको और पैरों को दरख़्त के पत्तों से छुपाओ। हार्दिक सम्बन्ध और बहुत भावुकता के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके ईमान और त्याग पर बड़े सम्मानित शब्द कहे।

हज़रत अब्बास बिन अबदिल मुत्तलिब रज़िअल्लाहु अन्हु-

चचाओं में दूसरे चचा थे, जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया। अलबत्ता एक समय तक इस्लाम कुबूल नहीं किया था लेकिन गुप्त रूप से हमदर्दी और सहायता बराबर करते रहे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध दुश्मनों की जो कार्यवाहियाँ होती थीं उनका निष्पक्षता के साथ निवारण करते थे। अन्त में जब मक्का के माहौल से उनको जो ख़तरात महसूस होते रहे थे उन ख़तरात के कमज़ोर हो जाने पर अपने इस्लाम का खुल कर इज़हार किया। उनसे भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ताकत पहुंची। आपके बेटों को भी इस्लाम लाने की दौलत नसीब हुई, जिनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 को ऊँचा मुकाम हासिल हुआ, जिनको खानदानी नातेदारी के ज़रिये हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसा सम्बन्ध रहा जो एक छोटे को अपने कुटुम्ब के बड़े से होता है। उनके वंश में अल्लाह तआला ने बड़ी बरकत दी, जिनमें राज़ से इल्म व दीन का बड़ा प्रसार हुआ और दीर्घ काल तक उनके वंश को शासन करने का अवसर मिला उनकी मृत्यु सन् 33 हिजरी में हुई।

हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़िअल्लाहु अन्हु-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब जो अपनी ज़िन्दगी भर बावजूद इस्लाम न लाने के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भरपूर हिमायत करते थे और मक्का में एक तरह से आपकी हिफाज़त का ज़रिया थे, उनकी वजह से आपको नबूवत मिलने के 10 साल तक बड़ी मदद मिलती रही और वह दुश्मनों के कष्ट पहुंचाने में अपनी हद तक बाधक बनते रहे वह अगरचे इस्लाम नहीं लाए लेकिन उनके कई बेटे इस्लाम लाए, जिनमें ख़ास तौर पर हज़रत अली और हज़रत जाफर और हज़रत अक़ील रज़िअल्लाहु अनहुम उल्लेखनीय हैं।

हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ि0 ने उन मुसलमानों का नेतृत्व किया था जो हिजरत करके हब्शा गए थे और वहां के बादशाह नजाशी से बहुत प्रभावशाली बात करके सहायता प्राप्त की थी। हज़रत जाफर की तकरीर बड़ी प्रभावकारी और इस्लाम की सर्वोत्तम व्याख्या थी। दीन के लिए बड़ी

कुर्बानियाँ दीं। ग़ज़व–ए–मूता सन् 8 हिजरी में मुसलमानों की कियादत करते हुए शहादत पायी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत प्रिय थे। उनकी वफ़ात का भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बड़ा असर पड़ा और आपने उन्हें 'तैयार' (उड़ने वाला) का ख़िताब दिया। उनके लिए एक मौक़े पर फरमाया "सूरत और सीरत (रूप और आचरण) में तुम मेरे समान हो, आयु में हज़रत अली से बड़े थे 40 से अधिक आयु पायी। उनकी ग़रीब परवरी की वजह से उन्हें "अबुल मसाकीन" अर्थात गरीबों का बाप का ख़िताब दिया गया और मअरके (युद्ध स्थल) में दोनों हाथ कट जाने की वजह से "जुल जिनाहैन" का ख़िताब मिला"। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैंने जाफर को फरिश्तों के साथ जन्नत में उड़ते देखा है[1]।

हज़रत सलमान फारसी रज़िअल्लाहु अन्हु–

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वालों में हज़रत सलमान फ़ारसी के इस्लाम लाने का वाक़िया बड़ा अहम है। वह ईरानी थे, लेकिन उनमें उचित धार्मिक व्यक्ति की तलाश थी, उस तलाश में वह कई ईसाई उल्मा और बुजुर्गों के यहां एक के बाद दूसरे के यहां रहे। लेकिन उनको अच्छा तजुरबा नहीं हुआ और आखिर में मक्का पहुंच कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिले और इस्लाम लाए और फिर बराबर इस्लाम को ताक़त पहुंचाने और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदद करने में शरीक रहे और इस्लाम की सुरक्षा में बाज़ उचित प्रस्ताव पेश किये, जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इख़्तियार किया। ग़ज़व–ए–ख़नदक़ में ख़नदक़ खोदने की तजवीज़ (प्रस्ताव) भी उन्हीं का था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी बड़ी क़द्र फ़रमाई और फ़रमाया "सलमान हमारे घर वालों में से हैं" मदाएन में सन् 36 हिजरी में इन्तिक़ाल फरमाया।

हज़रत सअद बिन मआज़ रज़िअल्लाहु अन्हु–

इस्लाम की दावत जब मदीना तय्यबा पहुंची और वहां के कई ज़िम्मेदार इस्लाम में दाखिल हुए उनमें मदीने के दो अहम क़बीलों के सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ जो क़बीले औस के सरदार थे और कबीले के बड़े ज़िम्मेदार और प्रभावशाली थे, इस्लाम में दाख़िल हुए और इसी तरह सअद बिन उबादा जो क़बीले खज़रज के सरदार थे और प्रभावशाली जिम्मेदार थे इस्लाम में दाखिल हुए। इन दोनों प्रभावी कबीले के अधिकतर लोग इस्लाम में दाखिल हो गये। इस तरह मदीने की अधिकतर जनसंख्या आज्ञाकारी हो गई और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वहां मुतकिल होने की दावत दी और इसी दावत पर आप हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना तय्यबा को अपना मरकज़ बनाया और इन दोनों कबीलों के लोगों ने मुकम्मल वफादारी और मुकम्मल ताबेदारी का सबूत दिया और मक्का से आने वाले मुसलमानों को अपने सगे

---

1. तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब।

भाईयों की तरह मेहमान बना लिया। इन हज़रात (सज्जनों) ने इस्लाम में दाख़िल होने के समय हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने एक सहाबी को मदीना बुलवाया, वह हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर थे। जिनका इस्लाम को विशाल ढंग से फैलाने में बड़ा हाथ था। मदीना के उसैद बिन हुज़ैर, असद बिन ज़रारा ने बड़ी मदद दी और हिकमत के साथ हज़रत मुसअ़ब बिन उमैर की सफलता में सहायता दी। जिसके नतीजे में लगभग पूरा मदीना इस्लाम का समर्थक और रक्षक बन गया और हज़रत सअद बिन मआ़ज़ और सअद बिन उबादा ने अपने अपने कबीले के सरदार होने की बिना पर इस्लाम और मुसलमानों को पूरी मदद दी। हज़रत सअद बिन मआ़ज हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के बाद पूरी जानिसारी के साथ इस्लाम की मदद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत का हक़ अदा करते रहे।

हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़िअल्लाहु अन्हु-

क़बील–ए–औस और क़बील–ए–ख़ज़रज मदीना मुनव्वरह के बड़े क़बीले थे। उनमें क़बील–ए–ख़ज़रज ज़ियादा बड़ा कबीला था। कबील–ए–औस अगरचे क़बील– ए–ख़जरज से छोटा था लेकिन उसी की टक्कर का क़बीला था। वह दोनों मिल कर मदीने के असल और बड़ी संख्या के निवासी थे। हज़रत सअद बिन उबादा क़बील–ए–ख़जरज के सरदार थे। इस्लाम के मदीना पहुंचने के समय उनकी बड़ी अहमियत थी और वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दिल से ईमान नहीं लाए थे, उनकी तरफ़ से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूरी और अन्दर से विरोध और गुप्त शत्रुता के बावजूद हज़रत सअ़द बिन उबादा ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गहरा सम्बन्ध रखा और अपने सरदार से प्रभावित नहीं हुए और इस्लाम से पूरी वफ़ादारी का सुबूत दिया।

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़िअल्लाहु अन्हु-

उसैद बिन हुज़ैर औस के सरदार थे, जिसके बड़े सरदार हज़रत सअद बिन मआज़ थे हज़रत सअद बिन मआज़ के इस्लाम लाने में उनकी कोशिश का बड़ा हिस्सा है। हज़रत असद बिन ज़रारा का भी बड़ा सहयोग रहा और यह सब हज़रात इस्लाम के ऐसे हामी (समर्थक) बने कि मुसलमानों को मदीने में सफल कार्यक्षेत्र बनाने में बड़ी मदद मिली।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़िअल्लाहु अन्हु-

जुन्दुब बिन जनादा नाम था और कबीले गिफार के फर्द थे। रिसालत मआब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर सुन कर मक्का मुकर्रमा आए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिल कर संतुष्ट हुए और ईमान लाए। फिर अपने क़बीले में और अपने पड़ोस "असलम" में कोशिश करके उनको इस्लाम की दावत दी और उनको इस्लाम में दाखिल किया और बराबर इस्लाम की

दावत का काम करते रहे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदद देते रहे। उन्होंने संयम और वैराग्य के जीवन को प्रमुख्ता दी और हमेशा धन से बचते रहे। संतोष के साथ कम से कम पर गुज़ारा किया और संयमी जीवन की ऐसी ऊँची मिसाल पेश की जो आपकी पहचान बन गयी। और आखिर में गोशानशीं हो गए।

हज़रत अबू दरदा रज़िअल्लाहु अन्हु-

उवैमर बिन साईदा नाम है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत में रहे और दीन का बड़ा इल्म हासिल किया। चुनांचे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद दीन के मुअल्लिम, मुहद्दिस, फक़ीह की हैसियत से हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी ख़िलाफत के ज़माने में शाम भेज दिया था। वहां उन्होंने दीन का इल्म खूब फैलाया।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु अन्हु-

मशहूर सहाबा में हुए, अबू अब्दुर्रहमान कुन्नियत है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहते हुए बहुत इल्म हासिल किया यहां तक की हराम हलाल के सिलसिले में सबसे बड़े आलिम कहे गए और इस सिलसिले में उनको विश्वास पात्र मिला। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विभिन्न मौक़ों पर उन्हें दीनी मसाइल की शिक्षा दी जिसकी जानकारी उन्होंने बाद के लोगों को दी और उसका प्रचार किया। उनसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि "मुझे तुमसे महब्बत है" उन्हें दीन की तालीम देने के लिए और लबलीग़ के लिए यमन भेजा था। जहां से वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के बाद मदीना आए और फिर शाम जा कर तालीम व दावत का काम किया और वहीं 15 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत हुज़ैफा बिन यमान रज़िअल्लाहु अन्हु-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो सहाबा बहुत क़रीब थे और जिनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम राज़ की बातें भी फ़रमाया करते, उनमें हज़रत हुज़ैफा को विशेष स्थान प्राप्त रहा। इसी लिए आपको "साहिबे सिर" अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के राज़ को जानने वाले का खिताब मिला। मुनाफिकीन की निशानदही और क़यामत तक पेश आने वाली मुसीबतों और भविष्यवाणियों का इल्म ख़ास तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हासिल किया। हज़रत उसमान रज़ि0 की शहादत की घटना के कुछ ही दिन बाद वफात पा गए।

हज़रत ख़ब्बाब रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत भी मशहूर सहाबा में थें और शुरु ही से इस्लाम में दाख़िल हुए और कुफ़्फार की तरफ से बहुत तकलीफें उठायीं। दहकते अंगारों पर लिटाए गए, और सीने पर पत्थर रखा गया ताकि हिल न सकें। मगर सब कुछ सहा अपने अक़ीदे व दीन पर मज़बूती से क़ायम रहे और अल्लाह के लिए दीन के लिए बड़े साहस का सबूत दिया।

हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु–

हज़रत बिलाल बिन रिबाह ने भी दीन के लिए तकलीफें उठायीं। हब्शा के रहने वाले थे और मक्का के एक सरदार के गुलाम थे। शुरु में इस्लाम लाए। इस पर उनको उनके सरदार ने बड़ी तकलीफ दी। ज़मीन पर उन्हें लिटा कर गरम पत्थर उन पर रखता और उनसे फिरने को कहता। वह "अहद अहद" (एक एक) कहे जाते यहां तक कि हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने उन्हें उससे खरीद लिया फिर आज़ाद कर दिया। यह बराबर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लगे रहे और जब नमाज़ के लिए अज़ान मुक़र्रर की गयी तो वही अज़ान देते थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको मुअज़्ज़िन बनाया और आख़िर तक वह मुअज्ज़िन रहे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत अंजाम देते रहे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद मदीना में रहने की उन्हें हिम्मत न हुई वह दूसरी जगह निकल गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़िअल्लाहु अन्हु–

बड़े दर्जे के सहाबी हैं बनी इस्राईल के फर्द हैं। यहूदी मज़हब से सम्बन्धित थे, यहूदियों के बड़े उल्मा में उनका शुमार होता था। ईमान लाए तो इस्लाम में भी उनका दर्जा बुलन्द हुआ और यह आयत नाज़िल हुई–

अनुवादः " और बनी इस्माईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया"।

(सूराः अहक़ाफ़–10)

चुनांचे यह बड़े उल्मा –ए–इस्लाम में भी हुए। जन्नत की बशारत हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी। क़ौम यहूद उनकी बड़ी क़ायल और उनकी उत्तमता और विशेषता को मानती थी लेकिन उनके ईमान लाते ही उनकी दुश्मन हो गई। अलबत्ता उनका अपना घर ईमान ले आया।

हज़रत सुहैब रज़िअल्लाहु अन्हु–

हज़रत सुहैब बिन सिनान भी मशहूर सहाबी हैं। रूम के इलाके के थे, दारे अरक़म में हाज़िर हो कर इस्लाम ले आए और उन्होंने इस्लाम लाने के बाद इस्लाम को अपनी बहादुरी और सैनिक क्षमता से फायदा पहुंचाया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विश्वास पात्र और आज्ञा पालक और कारगुज़ार सहाबी रहे। मुश्रिकीन मक्का ने उन्हें बड़ी तकलीफें दीं। हिजरत करने लगे तो आड़े आए मगर यह कहा कि अगर तुम अपना सारा माल व मता छोड़ दो तो जा सकते हो, उन्होंने वह सब कुर्बान कर दिया और हिजरत कर गए। इस पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "रबिहः सुहैब, रबिहः सुहैब" कि सुहैब ख़ूब नफा में रहे। हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु उनकी खूबियों के बड़े क़ायल थे और नमाज़ जनाज़ा के लिए उन्हीं के लिए वसीयत फरमाई थी।

❖❖❖

दीन (इस्लाम) का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

नोट:- हज़रत मौलाना रह़मतुल्लाहि अ़लैहि का यह विस्तृत लेख है जो कि मुसलमानों के लिए लाभदायक है, अपितु आवश्यक भी है अतः इसे सच्चा राही के पाठकों के लिए थोड़ा-थोड़ा करके (किस्तवार) सच्चा राही में प्रकाशित किया जाएगा, अलबत्ता यह उर्दू लेख उर्दू की उच्च कोटि की भाषा में है अतः इसे सरल हिन्दी में परिवर्तित करके इन्शाअल्लाह प्रकाशित किया जाएगा, परन्तु यह पहली किस्त जूं की तूं उर्दू को हिन्दी लिपि में कर दिया गया है और अन्त में कुछ कठिन शब्दों के अर्थ लिख दिये गये हैं, पाठक क्षमा करें।

इस काइनात में हर ज़िन्दा और मुतहर्रिक शै का एक ख़ास मिज़ाज कुछ नुमायां ख़ुसूसियात और उभरे हुए ख़द्द व ख़ाल होते हैं, जिनसे उसकी "शख़सियत" की तशकील और तअय्युन होता है, और उसकी सिफातें मुमय्यज़ा क़रार पाती हैं, इसमें अफ़राद जमाअतें, मिल्लतें और क़ौमें, मज़ाहिब और फ़लसफ़े यकसां तौर पर शरीक हैं, वह सब अपनी कुछ इम्तियाज़ी ख़ुसूसियात और नुमायां अलामात रखते हैं, इसलिए यह दरयाफ्त और तहक़ीक़ हक़ बजानिब है कि इस दीन (इस्लाम) की सिफ़ाते मुमय्यज़ा और उसकी शख़सियत के सही ख़द्द व ख़ाल क्या हैं? दीन की तफ़सीलात, तालीमात, हिदायात और मुअय्यन क़वानीन व ज़वाबित के मुतालअ़ और जुस्तुजू से पहले हमें इस हक़ीकत से बाख़बर हो जाना चाहिए, क्योंकि दीन से मुकम्मल तौर पर फ़ाइदा उठाने और उसके रंग में रंग जाने के लिए यही फ़ितरी तरीक़ा और उसके कुफ़्ल की शाह कलीद है।

सबसे पहले हमें इस हक़ीकत को ज़हन नशीं कर लेना चाहिए कि यह दीन हम तक हकीमों और दानिश्वरों, माहिरीने क़ानून, उलमाए अख़लाक़ व नफ़सियात, किश्वर कुशा और क़ानून साज़ बानियानें सल्तनत, ख़्याली घोड़े दौड़ाने वाले फ़लासफ़ा, और तालेअ़ आज़मा सियासी रहनुमाओं और मुल्कों और क़ौमों के क़ाइदीन के ज़रिये नहीं पहुंचा, यह दीन हम तक उन अंबियाए-किराम के ज़रिये पहुंचा है जिनके पास खुदा- ए-तआला की "वही" आती थी और जिनका सिलसिला ख़ातमुन नबीयीन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूवत पर ख़त्म हो चुका है हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर अरफ़ात के दिन यह आयत नाज़िल हुई थी—

"आज हमने तुम्हारे लिए दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया" (सूरः माइदा—3)

और जिनके बारे में क़ुरआन का इरशाद है:—

"और वह ख़ुवाहिशे नफ़्स से मुँह से बात नहीं निकालते हैं, यह क़ुरआन तो वहिये इलाही, जो उनकी तरफ़ भेजा जाता है" (अननज्मः 3—4)।

इस दीन का सबसे पहला इम्तियाज़ और नुमायां शिआ़र "अक़ीदह" पर ज़ोर

शेष पृष्ठ .....27...पर..

हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रमान आजमी नदवी

हमारे देश में प्राचीन काल से एक विशिष्ट वर्ग की ओर से मुसलमानों के लिए तंग नजरी तथा पक्षपात का भाव (रुहजान) पाया जाता है, लेकिन यह भाव इस लोकतांत्रिक काल में इस प्रकार उन्नति पा चुका है कि खुल्लमखुल्ला यह ऐलान करने में कोई शर्म तथा लज्जा महसूस नहीं की जाती कि मुसलमान इस देश के मूल निवासी नहीं हैं, यदि मुसलमानों को इस देश में रहना है तो वह बहुसंख्यक वर्ग की सभ्यता में अपने को ढाल कर तथा हिन्दू मज़हब धारण कर के रहें, वह इस्लामी रीति–रिवाज, इस्लामी सभ्यता तथा इस्लामी ज़िन्दगी की विशेषताओं को बिल्कुल छोड़ दें और बहुसंख्यक वर्ग के पदचिन्हों पर चलना सीखें।

इन भावनाओं को इस देश की तंगनजर, फिर्कापरस्त जमाअतें पूरी ताक़त से फैला रही हैं और गैर मुस्लिम समाज के जेहनों में मुसलमानों के मुतअल्लिक ऐसा नक़्शा जमाना चाहतीं हैं जिससे उनके मूल चरित्र पर पर्दा पड़ जाये, और अवाम की नज़र में उनकी स्थिति एक अधिकार प्राप्त और ज़ालिम क़ौम से ज़ियादा न हो, जिसका देश में कोई हिस्सा और उसको यहां रहने का कोई अधिकार हासिल नही है।

यही वास्तव में वह सामप्रदायिक सोच है जो न केवल हिन्दुसतान के लिए एक बड़े खतरे की भूमिका बन सकती है, बल्कि यह सोच जिस देश में भी पायी जायेगी वह देश सबसे पहले नैतिक बुन्यादों से तबाह तथा बर्बाद होगा और फिर हर प्रकार की तबाही उसका पीछा करेगी, अफसोस कि आज हमारे देश में एक विशेष वर्ग की ओर से मुसलमानों के लिए तंग नजरी और भेदभाव फैलाये जाने की ज़बरदस्त मुहिम जारी है, मुसलमानों का इतिहास बिगाड़ करके पेश करने की कोशिश का अंदाजा सरकारी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित उन साहित्यों से होता है जो हिन्दुस्तान में मुसलमानों के मूल तथा इतिहासिक तत्थयों से बिलकुल विपरीत और मनगढ़ंत इतिहास का चित्र हैं। यह देश की विश्व इतिहास का सबसे बड़ी कष्ट दायक दुखद बात है।

इसी सोच का नतीजा है कि इस देश की सबसे बड़ी अल्पसंख्यक अर्थात मुसलमान जो अपने आप में बड़ी बहुसंख्यक गिने जा सकते हैं, वह इस हद तक असुरक्षित और उत्पीड़ित हो चुके हैं कि वह बराबर जबरदस्त सामप्रदायिक हंगामों का शिकार होते रहते हैं, वह अपनी जान माल की ओर से इतने विवश हो चुके हैं कि साम्प्रदायिक दल जब चाहें उन पर हमला कर दें और उनके साथ वह तमाम सुलूक कर ड़ालें, जिसका उदाहरण जंगल के दरिंदों में भी नहीं मिल सकता।

यह वास्तव में उस गलत सोच की प्रारम्भिक कोशिश है जो किसी क़ीमत पर इस देश में मुसलमानों के रहने को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं, जो बिलकुल

ही इस्लाम और मुसमानों के नाम को इस देश के कोने कोने से मिटा देना चाहती है, जिसको किसी हाल में यह गवारह नहीं कि हिन्दू मजहब तथा सभ्यता के सिवा कोई मजहब तथा सभ्यता जिन्दा रहे, उसका नारा है कि हिन्दुस्तान केवल हिन्दुओं का है मुसलमानों का इस देश में कोई हक़ नहीं।

इस गलत सोच के अगुवाकारों और तंग नज़री की इस सोच को फैलाने वालों से मैं प्रश्न पूछना चाहता हूं कि जब तुम इस देश की कांटेदार वादियों में तथा जुल्मों बर्बरीयत के घोर अंधेरों में भटक रहे थे, इसी प्रकार जब तुम इस देश में सभ्यता तथा संस्कृति नाम की किसी चीज़ से वाकिफ नहीं थे, जब तुम जिन्दगी गुज़ारने के मूल सिद्धान्तों से बिल्कुल बेखबर थे, जब अख़लाक़ की अज़मत तथा बलन्दी और मानवता के उच्चता की हवा भी तुम को न लगी थी, जब मानव व जानवर को एक ही स्तर के दो प्राणी समझते थे, जब तुम अपने ही जैसे एक इंसान को इस प्रकार मलिक्ष और गंदा समझते थे कि वह अगर तुम्हारी ओर से गुज़र जाये तो तुम गर्दन उड़ाने का हकदार समझते थे, जब तुम इल्मो इदब अर्थात शिक्षा दीक्षा, शराफत और संस्कृति की अहमियत नहीं समझते थे तो किसने तुम को इन तमाम बातों का विवेक दिया, किसने तुमको मानवता के व्यापक तसव्वुर से अवगत किया, और किसने तुम को एक उच्च तथा आकर्षक सभ्यता से नवाज़ा?

मुझे बिना रोक टोक कहने दो कि यह सिर्फ और सिर्फ इस्लाम के रहमत के बादल थे जो तुम्हारी सूखी तथा बंज़र जमीन पर बरसे और कांटेदार बाग़ात को फूलों का महकता चमन बना दिया, यह इस्लाम ही की नेमत थी जिसको तुम्हारे पुर्खों ने सीने से लगाया और यह इस्लाम ही का चिराग था जिसने इस देश के कण कण को चमका दिया, आज भी इस्लाम ही के भांति भांति की नेमतों से लाभांवित हो रहे हो, उसी की लाई हुई सभ्यता तथा मानवता के आधार पर तुम इस देश के समस्त चल अचल सम्पत्ति के मालिक बन रहे हो, और उसी के जलाये दीप के मार्ग से गुज़र कर तुम विश्व के सामने खड़े होने के योग्य हो रहे हो।

इस्लाम का यह एहसान तुम पर मामूली नहीं, यद्यपि तुम ने इस्लामी तालीमात को कुबूल नहीं किया, और उसको धर्म की हैसियत से तस्लीम नहीं किया, लेकिन इस्लाम ने तुम्हारे जीवन के हर भाग पर गहरा असर डाला है, और उसके महान उपकारों से तुम कभी मुंह नहीं मोड़ सकते, आज तुम उसी इस्लाम को और उसके अनुयायियों को देश दुरोही ठहराते हो, और कहते हो कि इस्लाम और मुसमानों का इस देश में कोई स्थान नहीं, याद रखो! यदि इस्लाम और मुसलमानों के अस्तित्व से यह देश वंचित हो गया तो फिर वही जंगल का कानून यहां राइज होगा और विदेशी साम्राज्यवादी दरिंदे तुम को गुलाम बना कर उसी अंधकारमय काल की याद फिर ताज़ा कर देंगे जिससे निकलने के लिए तुमने मुसलमानों के संग मिलकर आजादी की जंग लड़ी थी।

मुसलमान इस देश में बराबर का भागीदार है, उसने इस देश की उन्नति और आगे बढ़ाने के लिए जो कुर्बानियां दी हैं वह कभी फरामोश (विस्मृत) नहीं की जा सकतीं, उसने इस मुल्क को आज़ाद कराने के लिए जिस प्रकार बढ़ चढ़ कर भाग लिया है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता, मुसलमानों की ना कद्री और एहसान न मानने की इससे बढ़ कर कोई और मिसाल नहीं हो सकती कि तंग नज़रों का एक वर्ग उठे और मुसलमानों को तुच्छ करने और उनको खत्म करने के लिए नरसंहार की एक संगठित आंदोलन चलाये और उनके वंश विनाश के लिए अनेकों प्रकार की योजनायें बनाये और उसको अशांति के नाम पर लागू करे।

तंगनज़री का उदाहरण इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है कि मुसलमानों के महान कृतियों और उनकी खिदमात और कुर्बानियों को बिल्कुल ही नज़र अंदाज कर दिया जाये और उनको अनेकों प्रकार से सताया तथा परेशान किया जाये, ताकि वह देश छोड़ने या पुरातन हिन्दुस्तानी सभ्यता में सम्मिलित हो जाने पर मजबूर हो जायें।

"मुसलमान हिन्दुस्तान छोड़ दें" का नारा लगाने वालों से मैं पूछता हूं कि मुसलमान क्यों हिन्दुस्तान छोड़ दें, क्या हिन्दुस्तान उनका मुल्क नहीं है? क्या इस देश की मिट्टी से वह नहीं तैयार हुए हैं? जबकि सच यह है कि मुसलमानों ने जो कुछ इस मुल्क को दिया, किसी क़ौम ने नहीं दिया, उन्होंने इस मुल्क की जो खिदमत की वह किसी ने नहीं की, इसीलिए यह कहना सही है कि वह हमेशा इस देश में रहेंगे और किसी को मुसलमानों के लिए हिन्दुसतान छोड़ने का नारा लगाने का कभी कोई हक़ नहीं पहुंचता, और जो ऐसा करता है वह सभ्यता, मानवता और अन्तरात्मा की अदालत में सबसे बड़ा मुजरिम है।

इन हालात में जब कि मुसलमानों के वजूद को बर्दाश्त करने की ताक़त दिनो दिन इस देश के लोगों में कम होती जा रही है, और इस्लाम तथा मुसलमानों को मिटाने और उनकी सभ्यता तथा प्रथाओं को मिटाने के लिए ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाया जा रहा है, हम पर सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह लागू होती है कि हम इस्लाम की शिक्षाओं को अपनी ज़िन्दगी में व्यक्तिगत तथा सामूहिक तरीक़े पर लागू करने की पूरी कोशिश करें, हम अपनी इस्लामियत को अपनी निजी ज़िन्दगी के हर पहलू में प्रसिद्ध करने की कोशिश करें, इस्लामी प्रथाओं तथा विशेषताओं पर निजी ज़िन्दगी में और समाज में हर तरह अमल करने और कराने की कोशिश करें, इस्लाम के मूल आस्थाओं तथा स्तंभों पर अपने ईमान को ज़ियादा से ज़ियादा मज़बूत करें और उसके दशा को ज़िन्दगी के हर भाग में प्रभुत्वशाली करने की कोशिश करें।

इन हालात का खामोश मुक़ाबला हम इसी प्रकार कर सकते हैं कि जितना ही हमारी सभ्यता को मिटाने की कोशिश की जाये, उसी प्रकार हम उसको प्रसिद्ध करें, और उस पर पाबंदी करें, आज मुसलमानो की एक बड़ी संख्या (जिसमें अच्छे अच्छे पढ़े लिखे लोग भी सम्मिलित हैं) अपनी

शेष पृष्ठ .....21...पर..

ज़िक्रे पयम्बर व यादे रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

—मौ0 अब्दुल माजिद दरियाबादी रह0

हबीबे किबरिया की हयात मुबारका की ये जामिईयत सिर्फ इसलिए थी कि हर फर्दे बशर इस नमूने को अपने पेशे नज़र रखे और जहां तक उसका ज़र्फ बिसात इजाज़त दे उन्हीं के नक़शे क़दम पर चले, गुलिस्ताने दहर में बारहा रूह परवर बहारें आ चुकी हैं, लेकिन मौसम रबीअ़ का ये गुलिस्तां ऐसा है जो हर मुल्क, हर ज़माना हर क़ौम के मशामे जां को मुअत्तर रखेगा, आज दुन्या की सबसे बड़ी शामत यही है कि उसने अपने ज़ियादा कामिल व मुकम्मल नमूने की तरफ से क़तअ़ नज़र कर ली ग़ैरों का ज़िक्र नहीं, खुदा हम कल्मा गोयाने इस्लाम की बदबख्ती यही है कि हमने आफताबे हिदायत की तरफ से आँखें बंद करके अपने तईं या तो अंधेरे में डाल रखा है और या अगर रौशनी की तलब है भी तो टिमटिमाते हुए चराग़ों और लालटेनों पर क़नाअ़त है।

हम में आज कितने बदबख़्त मुसलमान ऐसे हैं जो खूबी व कमाल का मेअ़ार यूरोप के तौर व तरीक़े को समझ रहे हैं क़ौमी तअ़लीम इसलिए ज़रूरी है कि यूरोप में इसका रवाज है मुआ़शरत को आला मेयार पर इसलिए लाना चाहिए कि यूरोप का तर्ज़ यही है सूदख्वारी इसलिए बेहतर है कि यूरोप इसके ज़रिये से तरक़्की कर रहा है ये हमारे दिमाग़ों का एक आ़म तरज़े इस्तिदलाल हो गया है इससे उतर कर वह तबक़ा है जो मज़हबी समझा जाता है इसलिए बेचारों की शामत ये है कि बजाए सरकारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इक्तिसाबे फैज़ करने के उन्होंने सारी जुस्तजू और तग व दौ महज़ किसी आलिम दुर्वेश तक महदूद कर रखी है हालांकि कोई उम्मती कितना ही बुलन्द पाया हो, ज़ाहिर है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नालैने मुबारक के बराबर भी नहीं हो सकता है—

अगर आज हम उस बड़े अमीन के नक्शे क़दम पर चलते होते तो हम में ख़यानत व बद दियानती का गुज़र न होता अगर आज हम उस रऊफ व रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैरो होते तो हमारे दिलों में एक दूसरे की जानिब से बे एअ़तिमादी व बद गुमानी न होती, अगर आज हमने उस ग़ारे हिरा के बैठने वाले के आसारे मुबारक को अपना सुरम—ए—चश्म बनाया होता तो हमारे बातिन में किसी क़िस्म की गन्दगी न बाक़ी रह जाती, अगर आज हम फातेहे बद्र की अ़ज़मत दिल से करने वाले होते तो मुखालिफीन के मुक़ाबिल में हमें शिकस्तें नसीब न होतीं अगर आज हम रहमतुल लिलआलमीन के पयाम पर सच्चे दिल से ईमान रखते होते तो अपने जैसी मख़लूक़ात के साथ हमें बेगानगी व मुखालिफ़त न होती अगर सच बोलने वाले और सच के बरतने वाले नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम के तरीक़े पर हम क़ाइम होते तो झूठ का हमारी आबादियों में नामो निशान ही न होता अगर आज हमको इस्म पाक अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाज होती तो अल्लाह की हमदो सना से हमें इस क़दर गुरेज़ न होता अगर आज हमको इस्मे गरामी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अमदन कोई वासता होता तो अपनी मौजूदा पस्ती व बदनामी से ये मराहिल दूर होते।

आज जब कि सारे मुल्क में मीलादे मुबारक की महफिलें आरास्ता हो रही होंगी क्या यह बेहतर न होगा कि उनके साथ साथ हम अपने खलवत खान–ए–क़ल्ब में भी कुछ देर के लिए ज़िक्रे पयम्बर व यादे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महफिल गरम करें।

कठिन शब्दों के अर्थ:–

ज़िक्र= वर्णन, पयम्बर= सन्देष्टा, हबीब= मित्र, किबरिया= अल्लाह तआला का एक नाम, हयात मुबारका= पवित्र जीवनी, जामिईयत= व्यापकता, फर्दे बशर= मनुष्य, ज़र्फे बिसात= साहस, गुलिस्ताने दहर= संसार, मशामे जाँ= मस्तिष्क, मुअ़त्तर= सुगंधित, कल्मा गोयाने इस्लाम= इस्लाम का कल्मा पढ़ने वाले अर्थात मुसलमान, क़नाअत= संतोष, मेयार= मापदण्ड, तरज़े इस्तिदलाल= तर्क विधि, इक्तिसाबे फैज= लाभान्ति, नालैने मुबारक= पवित्र जूते, खयानत= कपट, बददियानती= विश्वास हीनता, रऊफ= दयालू, रहीम= कृपालु, आसारे मुबारक= पवित्र पगचिन्ह, रहमतुललिलआलमीन= संसार के लिए करूणा अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, खलवत= एकान्त, खलवत खा–नए–क़ल्ब= हृदय के आन्तरिक।

❖❖❖

हमारी सबसे बड़ी .....

सभ्यता तथा प्रथाओं से गाफिल हो कर ज्ञान अथवा अज्ञानता में दूसरी सभ्यताओं से प्रभावित हो चुके हैं, वह ढेरों गैर इस्लामी त्यौहारों में अथवा उन उत्सवों में जिनका मुसलमानों से कभी कोई तअ़ल्लुक नहीं रहा, बिल्कुल उनके अनुयायियों ही के प्रकार भाग लेते हैं अथवा उनको सही समझने लगे हैं, जिसको हम अकसर मौक़ों पर देखा करते हैं।

हमारी ज़िम्मेदारी अथवा हमारा पैगाम यहीं पर खत्म नहीं हो जाता कि हम हालात के सामने हथियार डालने से बचने का प्रयास करें, बल्कि हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि अपनी क़ौमी अथवा दीनी विशेषताओं को क़ाइम रखते हुए उन हालात को बदल दें जो आज हमारी सबसे बड़ी तबाही तथा बर्बादी और ज़िल्लत तथा रुसवाई का कारण हैं, दूसरों की ओर से पैदा किये हुए हालात से पहले हमको अपने हालात का जायज़ा लेना चाहिए, कि हम किस हद तक मुसलमान हैं और कहां तक इस्लामी विशेषतायें हमारे अन्दर पाई जाती हैं? अगर हमने अपने हालात का सही जायज़ा ले कर उनको बदलने का प्रयास किया तो बाहरी दुन्या से जो हालात हम पर थोपे गये हैं वह स्वतः बदलने लगेंगे।

❖❖❖

वास्तविक सफलता की प्राप्ति

—मुहम्मद फरमान नदवी

अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति हर मोमिन की अन्तिम इच्छा होती है, वही उसकी सफलता का चिन्ह तथा प्रतीक है, यह एक ऐसी मानी हुई वास्तविकता है जो अ़क़्ल तथा शरीअ़त (इस्लामिक विधान) के पूर्णतः अनुकूल है, इस्लाम में सफलता का मापदण्ड धन तथा सम्पत्ति, पद तथा सांसारिक सत्ता और सांसारिक प्रतिष्ठा को नहीं बताया अपितु अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुकूल कर्म करके जन्नत प्राप्त करना ही सफलता की कसौटी और उसका मापदण्ड है, पवित्र कुर्आन में है कि (अगले जीवन में) जो जहन्नम की आग से बचा दिया गया और जन्नत में प्रवेश पा गया वही सफल हुआ और यह दुन्या का जीवन तो धोखे का सौदा है (आले इमरानः185)

इस लक्ष्य के प्राप्ति हेतु दीन व शरीअ़त की व्यवस्था स्थापित हुई दीन व शरीअ़त (इस्लाम धर्म तथा उसका विधान) अल्लाह तआला का प्रदान किया हुआ भव्य वरदान है, इसमें हर समस्या का समाधान तथा हर दुख का निवारण विद्यमान है।

दीन व शरीअ़त के वास्तविक उदगम पवित्र कुर्आन में दो वस्तुओं को स्थायुत्व जीवन का साधन बताया है, उन्हीं के द्वारा यह रात दिन का आना जाना चल रहा है, यह एक वास्तविकता है कि इन्सान शरीर तथा आत्मा से बना है, शरीर की अलग मांगें हैं, जो भौतिक वस्तुओं से सम्बन्धित हैं, अर्थात आग, पानी, हवा, मिट्टी आदि।

सूरतुन्निसा में आया है, और न समझों को अपना माल मत दो जिसको अल्लाह ने तुम्हारे लिए गुज़र औक़ात का साधन बनाया है। (अन्निसाः5) इससे ज्ञात हुआ कि माल सांसारिक जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक है और उसे नष्ट होने से बचाना चाहिए। अगर माल न हो तो मनुष्य की शारीरिक व्यवस्था टूट फूट जाए, दूसरी ओर आत्मा से मानव का जीवन है तथा आत्मा (रूह) का आधार तथा उसकी आवश्यकताएं शरीर से भिन्न हैं सूरतुल माइदा में है, अनुवादः अल्लाह ने प्रतिष्ठा वाले घर "काबा" को लोगों के लिए क़ियाम (अस्थयुत्व) का साधन बनाया

(अलमाइदाः97)

इस्लामिक चिन्तक हज़रत मौलाना अली मियां रह0 का कथन है कि संसार बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) से स्थिर है। यह वास्तविकता है कि यदि बैतुल्लाह का सन्देश तथा उपदेश (तौहीद, रिसालत, आखिरत आदि) न हो तो इस संसार के बाक़ी रहने की कोई वैधता न बौधिक है न वैधानिक, यही सन्देश आत्मा का आधार और उसकी वास्तविक पूंजी है। उसी सन्देश तथा उपदेश से आत्मा जीवित तथा गतिशील रहती है। शरीर तथा आत्मा

दोनों की मांगें (धनोपार्जन तथा विश्वास की शुद्धता) उनके लिए अत्यंत महत्व है, अपितु उन्हीं पर उनका (शरीर तथा आत्मा) अस्तित्व निर्भर है अतः दोनों की शुद्धता की चिन्ता हर बुद्धि रखने वाले का कर्तव्य है।

धन की प्राप्ति मानव जीवन के अस्तित्व हेतु आवश्यक है। पवित्र कुर्आन में माल (धन) को कहीं "फ़ज़्ल" और कहीं "ख़ैर" के नाम से वर्णित किया गया है और पवित्र कुर्आन में आदेश है कि जब नमाज़ पूरी कर लो तो अल्लाह के फ़ज़्ल (धन) कमाने के लिए निकल जाओ। (सूरतुल जुमाः10)

और एक हदीस में आया है कि (वैध विधि से) धनोपार्जन करने वाला अल्लाह का प्रिय है वह अपनी और अपने घर वालों की आजीविका का प्रबन्ध कर रहा है परन्तु यह उसी समय संभव है जब मनुष्य शुद्ध नियम पर हो। इस बात को शरीअ़त (इस्लामिक विधान) की सम्पूर्ण जानकारी के बिना नहीं समझा जा सकता है। शरीअ़त में हलाल व हराम (वेध तथा अवैध) को मौलिक महत्व प्राप्त है इसी पर कर्मों की स्वीकृत निर्भर है तथा जहन्नम से बचाए जाने और जन्नत में प्रवेश पाने की निर्भरता है, पवित्र कुर्आन में हलाल व हराम का उल्लेख अनगिनत आयतों में विद्यमान है यह आदेश की आयतें कहलाती हैं उनको इस्लामिक विधान की आयतों के नाम से भी जाना जाता है हदीस शरीफ में तो इसका अत्यधिक उल्लेख है परन्तु हदीस में ये भी आया है कि एक ऐसा समय आएगा जब लोग हलाल व हराम की कोई प्रवाह न करेंगे जब कि हलाल व हराम उनके सामने स्पष्ट होगा पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआ़ला ने अपने नबियों को आदेश दिया कि ऐ मेरे नबियो पवित्र आजीविका खाओ और भले काम करो।

(अलमोमिनूनः51)

ईमान वालों को भी आदेश हुआ कि ऐ ईमान वालो पवित्र आजीविका खाओ जो हमने तुमको दी है (अलबक़रहः 172) हर आहार में एक प्रभाव होता है हराम आहार से जो मांस तथा खून बनता है उसमें बहुत सी बुराईयां होती हैं उससे आचार विकृत होते हैं, पापों की तरफ झुकाव होता है, मन में विकार आता है, सन्तान पर बुरा प्रभाव पड़ता है, इबादत में मन नहीं लगता है और सबसे बड़े डर की बात यह है कि हदीस में आया है कि हराम आहार से बना शरीर जन्नत में प्रवेश न पाएगा सिवा इसके कि हराम खाने वाला मरने से पहले बन्दों के हक चुका कर और क्षमा याचना द्वारा अपने रब को प्रसन्न करले अन्यथा वह पहले जहन्नम में जायेगा और हराम खाने का दण्ड भोगेगा फिर अल्लाह की कृपा तथा ईमान के प्रतिफल पा सकेगा।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि अल्लाह तआ़ला पाक है और पाक माल को कुबूल करता है अर्थात अल्लाह निर्दोष है और शुद्ध माल ही को स्वीकार करता है तथा अपने उन बन्दों को स्वीकृत प्रदान करता है जो हलाल (वैध) माल खाते हैं।

अल्लाह तआला ने ईमान वालों को भी हलाल रोजी खाने का आदेश दिया और अपने रसूलों को भी जैसा कि ऊपर आ चुका है आगे एक व्यक्ति का उल्लेख है जो दूर दराज से छिन्न भिन्न दशा तथा बिखरे बालों के साथ मक्का मुकर्रमा की यात्रा करता है, वहां पहुंच कर या रब! या रब! कह कर दुआ करता है परन्तु उसकी दुआ कैसे स्वीकार हो जब कि उसके शरीर पर हराम वस्त्र तथा पेट में हराम आहार है (बुखारी)।

हराम (अवैध) खाने के बहुत से रूप हैं, जैसे ब्याज खाना, घूस खाना, किसी का माल हड़प कर लेना, नाप तौल में कमी करके माल कमा कर खाना और धरोहर को हड़प कर लेना, यह सब माल हराम हैं कुर्आन व हदीस से इनका हराम (अवैध) होना सिद्ध है, हदीस शरीफ़ में आया है कि सात विनष्ट कर देने वाली वस्तुओं से बचो। शिर्क (अल्लाह के साथ साझी ठहराना) जादू, अकारण वध, ब्याज खाना, अनाथों का माल खाना, जिहाद से भागना सतीत्व स्त्रियों पर आरोप लगाना (बुखारी मुस्लिम)।

अल्लाह तआला ने व्यापार को वैध किया, और ब्याज को हराम किया है, इस्लाम से पहले तमाम मज़ाहिब (धर्मों) में ब्याज को हराम किया गया परन्तु, कुर्आन में बड़े महत्व के साथ ब्याज को हराम होने को घोषित किया है, सूरहः बकरा की कई आयतों में ब्याज के हराम होने का उल्लेख है।

ब्याज उन बुराईयों में है जिनके कारण अल्लाह तआला इस संसार में भी दण्ड देते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब किसी समुदाय में व्यभिचार और ब्याज खाना बहुत हो जाए तो समझ लो कि उस बस्ती वालों ने अपने ऊपर अल्लाह के प्रकोप को उतार लिया है, और मुसनद अहमद में है कि जब किसी क़ौम में ब्याज आम होता है तो अल्लाह उस पर सूखा का प्रकोप उतारते हैं।

सूद (ब्याज) की वास्तविकता यह है कि मनुष्य जितना दे उससे अधिक ले, हदीस में उल्लेख है कि, अनुवादः हर वह क़र्ज जिस पर लाभ मिला वह ब्याज है, इसमें एक इन्सान को फाइदा और दूसरे को घाटा होता है, इस्लाम इसकी बिलकुल इजाज़त नहीं देता कि किसी इन्सान को घाटा पहुंचाया जाए।

आज कल एक फैशन यह हो गया है कि बैंक में भारी रक़म रख दी जाती है उससे जो आय ब्याज के रूप में मिलता है उसी पर पूरा गुज़र बसर होता है, यह बड़े भय की बात है, बाज़ बुजुर्गों ने ब्याज को गन्दगी (मल मूत्र) जैसा कहा है, और यह बात उचित है।

दो चीज़ें ऐसी हैं जिन पर जगत के निर्माता ने युद्ध की घोषणा की है, एक ब्याज का खाना, जब मनुष्य ब्याज खाता है, तो वह जैसे अल्लाह के आदेश के विरुध विद्रोह कर रहा है, इसी लिए अल्लाह की ग़ैरत जोश में आती है और उसके लिए आपत्ति का कारण होती है,

पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः *यदि लोग ब्याज खाने, लेने से नहीं रूकते तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए तैयार रहें। (अलबकराः 279)*

और अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में घोषित किया है कि अनुवादः *जो लोग ब्याज खाते हैं वह कियामत के दिन इस प्रकार उठेंगे जैसे वह उठते हैं जो शैतान के लगने से पागल हो गये हों।*

दूसरी चीज़ औलिया–उल्लाह (अल्लाह के प्रिय बन्दों) को कष्ट देना है, यह भी ऐसा कठोर पाप है कि अल्लाह की ओर से युद्ध की घोषणा है, हदीस में है, अनुवादः जिसने मेरे वली से शत्रुता की मैं उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा करता हूं।

(सही बुखारी)

दूसरी बात जिस पर संसार की व्यवस्था की निर्भरता है वह अक़ाइद (शुद्ध विश्वास) है उलमा शुद्ध विश्वास के जानकार और उनके बताने वाले होते हैं, उलमा शुद्ध विश्वास के प्रकाश में लोगों को सही बात बताते हैं। अतः उलमा का अस्तित्व इस संसार के अस्तित्व का साधन है, एक हदीस में उलमा को सितारों (नक्षत्रों) जैसा बताया गया है, (मुसनद अहमद बिन हंबल)

सितारों को अल्लाह तआला ने संसार का शोभा बनाया है (अलमुल्कः5) मुसाफिरों को रास्ता मालूम करने का साधन बताया है (अन्नहलः 165) तथा शैतानों को मारने (जला देने) का साधन बनाया है (अलमुल्कः 5) इसी प्रकार उलमा शरीअ़त के जानकार संसार की शोभा हैं, भटके लोगों को मार्ग बताने वाले हैं और बातिल (मिथ्या तथा भ्रष्ट) बातों के कठोर विरोधी हैं उनके अपमान से केवल कर्म ही अकारत होने का भय नहीं अपितु अल्लाह तआला की तरफ़ से अपमान करने वालों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है। परन्तु हिन्द, पाक, तथा बंगला देश में ऐसे अंगिनत उलमा हैं जो अक़ाइद भी ख़राब करते हैं और आ़माल भी वह मृतक मोमिन महा पुरुषों से दुआ मांगने तथा बिदआ़त अपनाने को वैध बताते हैं अल्लाह तआला ऐसे उलमा से बचाए, आमीन। लेकिन जो वास्तविक अल्लाह वाले हैं उनको सताने पर अल्लाह तआला का प्रकोप आता है।

हज़रत सईद बिन जैद "अश–रए–मुबश्शरा" में से हैं, एक औरत ने जिस का नाम अरवा बिन्त औस बताया गया है, उसने हज़रत सईद पर आरोप लगाया कि उन्होंने मेरी ज़मीन हड़प कर ली है। रावी ने ज़िक्र नहीं किया है परन्तु काजी के सामने सुनवाई हुई होगी और औरत झूठी सिद्ध हुई होगी फिर भी हज़रत सईद रज़ि.को इससे बड़ा दुख हुआ, उस औरत पर अल्लाह का प्रकोप आया वह अन्धी हो गई और उसी ज़मीन के कुएं में गिर कर मर गई।

यह है परिणाम अल्लाह वालों को दुख देने का यह घटना मिशकात शरीफ में उल्लेखित है।

अवैध किसी का माल खाना अल्लाह के निकट बड़ा खराब काम है, हज़रत सुवैद बिन गफ्ता रज़ि0 एक सहाबी हैं, वह अपनी एक घटना बयान करते हैं कि मैं

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया, मुझे रास्ते में एक दीनार की थैली गिरी हुई मिली, जब मैंने इस का ज़िक्र आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किया तो आपने आदेश दिया कि साल भर इस की घोषणा करो, मैंने ऐसा ही किया परन्तु मालिक का पता न चला, फिर थैली ले कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया तो दूसरे और तीसरे साल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घोषणा करने का आदेश दिया, आखिर में आदेश दिया कि यदि मालिक का पता न लगे तो अपने काम में ला सकते हो।

(मुस्लिम शरीफ)

ऐसा इसलिए किया ताकि अवैध माल खाने से बचा जा सके मुस्लिम शरीफ में एक दूसरा किस्सा भी आया है कि एक आदमी ने एक ज़मीन खरीदी, खरीदने वाले ने ज़रूरत से ज़मीन में खुदाई की तो उसको उसमें सोने के सिक्कों से भरा एक बरतन मिला, वह बरतन लेकर वह जमीन बेचने वाले के पास आया और कहा कि लो यह अपना माल, मैंने केवल ज़मीन खरीदी थी सोना नहीं खरीदा था, बेचने वाले ने कहा मैंने ज़मीन और उसमें जो भी हो सब तुम्हारे हाथ बेचा था, विवाद बढ़ा, और काज़ी के सामने गया, काज़ी ने दोनों की बातें सुनी, फिर पूछा तुम दोनों बताओ तुम्हारी सन्तान हैं, एक ने कहा मुझे अल्लाह ने एक बेटी दी है, दूसरे ने कहा अल्लाह ने मुझे एक बेटा दिया है, काज़ी ने कहा दोनों का निकाह कर दो और यह माल वह दोनों अपने काम में लायें अतः ऐसा ही हुआ। दोनों अल्लाह से डरने वाले और हराम माल खाने से बचने वाले थे।

इस काल में दुख की बात यह है कि लोग नेकियां तो करते हैं परन्तु नेकियों को बचाने की चिन्ता नहीं करते, यदि हम अपनी नेकियों को बचाये रखेंगे तो अल्लाह की कृपा हमारे साथ रहेगी।

सहा–बए–किराम अधिक नफ्ली नमाजों और रोज़ों वाले न थे, ईमान उनके रग व रेशे में प्रवेश कर चुका था, वह हलाल व हराम का ज्ञान भली भांति रखते थे और हराम से बचते हुए जीवन बिताते थे अवैध किसी का माल खाना महा पाप तथा जहन्नम की ओर ले जाने वाला है, अल्लाह हमारी सुरक्षा करे।

वैध खाने और अवैध से बचने का वर्णन यहां विस्तार के साथ इसलिए किया गया कि लोग इसमें बड़ी कोताही करते हैं वरना अगर कोई शख़्स जीवन भर हलाल खाये, हराम को हाथ न लगाये उसका विश्वास (अक़ीदा) भी शुद्ध हो परन्तु वह शरीअ़त के दूसरे अनिवार्य कर्मों (फराइज़, वाजिबात और मुअक्किदा सुननतें) की अनदेखी कर दे तो वह जहन्नम की आग से नहीं बच सकता अतः एक मोमिन के लिए आवश्यक है कि जहां उसका विश्वास शुद्ध हो और वह अवैध से बचे, वैध खाये पिये वहीं वह नमाज़ों की पाबन्दी भी करे, रमज़ान के रोज़े रखे, माल की जकात दे, सामर्थ होने पर हज करे, शरीअ़त के

अनुकूल निकाह करे सुन्नत के अनुकूल वलीमा करे, बच्चे के जन्म पर वही करे जिसका शरीअ़त में आदेश है, बच्चों की देख रेख, पालन पोषण, शिक्षा दीक्षा, शरीअ़त के अनुकूल करे। किसी के देहान्त पर वही करे जिसका शरीअ़त में आदेश है, जहां अवैध खाने से बचे वहीं अवैध कर्मों से भी दूर रहे जैसे नाच बाजा सिनेमा जुवा आदि तथा बिदअ़तों से बचे, नशे वाली वस्तुओं के प्रयोग से दूर रहे तात्पर्य यह कि पूरा जीवन सुन्नत के अनुकूल बिताये जिस प्रकार वह स्वयं शरीअत की पाबन्दी करे दूसरों को भी शरीअ़त पर लाने का प्रयास करे, जब यह बातें एक मोमिन को प्राप्त हो जायेंगी तो वह जहन्नम से बचा दिया जायेगा और जन्नत में प्रवेश पायेगा। अल्लाह की प्रसन्नता पायेगा यही एक मोमिन के लिए उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति है, सर्वोच्य उन्नति की प्राप्ति है और यही वास्तविक सफलता की प्राप्ति है।

❖❖❖

दीन (इस्लाम) का .....

और इसरार, और सबसे पहले इसका मसअला हल कर लेने की ताकीद है, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर ख़ातमुननबीयीन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक तमाम अंबियाए किराम एक मुअय्यन अक़ीदे की (जो उनको "वही" के ज़रिये मिला था) दअ़वत देते और मुतालबा करते रहे, और उसके मुक़ाबिले में किसी मुफ़ाहमत या दस्तबरदारी पर तैयार न हुए उनके नज़दीक बेहतर से बेहतर अख़लाक़ी ज़िन्दगी और आला से आला इन्सानी किरदार का हामिल, नेकी व सलाह, सलामत रवी और मअ़कूलियत का ज़िन्दा पैकर और मिसाली मुजस्समा ख़ुवाह उससे किसी बेहतर हुकूमत का क़ियाम, किसी सुवालह मुआ़शरे का वजूद और किसी मुफ़ीद इन्क़िलाब का जुहूर हुआ हो, उस वक़्त तक कोई क़दरो क़ीमत नहीं रखता, जब तक वह उस अक़ीदे का मानने वाला न हो जिसको वह लेकर आए और जिसकी दअ़वत उनकी ज़िन्दगी का नसबुलऐन है और जब तक उसकी यह सारी कोशिशें और काविशें सिर्फ उस अक़ीदे की बुन्याद पर न हों, यही वह हद्दे फ़ासिल और वाज़ेह व रौशन ख़त है जो अंबिया–ए–किराम अलैहिमु–स्सलाम की दअ़वत और क़ौमी रहनुमाओं, सियासी लीडरों, इन्क़िलाबियों और हर उस शख़्स के दरमियान ख़ींच दिया गया है, जिसका सरचशमए फ़िक्र व नज़र अंबियाए किराम की तालीमात और सीरतों के बजाए कोई और हो।

कठिन शब्दों के अर्थ:–

काइनात= संसार, ख़ुसूसियात= विशेषताएं, ख़द व खाल= चेहरा मुहरा, रंग–रूप, तअ़य्युन= निर्धारण, सिफाते मुमय्यज़ा= अस्पष्ट गुण, इम्तियाजी खुसूसियात= प्रमुख विशेषताएं, जुस्तुजू= खोज, कुफ़्ल= ताला, कलीद= चाबी, शाह कलीद= वह चाबी जो हर ताले में लग जाये, तालेअ़ आज़मा= भाग्य खोजने वाले, वही (वह्य)= ईश वाणी, मुअय्यन= निर्धारित, मुफ़ाहमत= सन्धि, नसबुल ऐन= उद्देश्य, हद्दे फ़ासिल= पृथक करने वाला।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख़्स ने अपने खेती की ज़मीन का तीन साल का किराया पेशगी लेकर किसी को किराये पर दे दिया क्या ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः ज़मीन का जो लगान आम तौर पर होता है, उतने ही मिक़दार के हिसाब से पेशगी किराया पर अगर ज़मीन दी जाती है तो यह दुरुस्त है और इसे पेशगी लगान किराया कहा जाएगा। (शरहे मजल्ला 261/1)

प्रश्नः हुकूमत बहुत से काम ठेके पर देती है जैसे सरकारी इमारतें बनवाना वग़ैरह क्या ठेका लेने का पेशा इख़्तियार करना दुरुस्त है?

उत्तरः हुकूमत ने जिस काम का ठेका दिया और किसी ने यह तय करते हुए मनजूर किया कि इतनी रक़म लूंगा इस तरह का काम करूंगा और जो कुछ बचेगा वह मेरा होगा, बिला शुब्हा यह ठेका लेना दुरुस्त है, मौजूदा दौर में सारी तफसीलात तै हो कर ठेका दिया जाता है इस लिए इसके करने में शरअन कोई हरज नहीं अलबत्ता यह ज़रूरी है कि मुआहदा के मुताबिक़ काम हो और धोखा धड़ी न हो हदीस में आता है—

अनुवादः मुसलमानों के लिए शराइत के मुताबिक मुआमला करना दुरुस्त है मगर ऐसी कोई शर्त न हो जो हलाल को हराम करदे या हराम को हलाल करदे।

(तिर्मिजी 251/1)

प्रश्नः क्या साल भर की तनख़्वाह पेशगी लेना दुरुस्त है? बाज़ कम्पनियां ऐसा करती हैं।

उत्तरः जिस तरह माहाना तनख़्वाह का मुआमला दुरुस्त है उसी तरह साल भर में एकमुश्त मिक़दारे मुअय्यन पर मुआमला करना और पेशगी तनख़्वाह लेना दुरुस्त है अल्लामा ज़ैलई ने इसको दुरुस्त करार दिया है। (तबयीनुल हक़ाइक़ 123/5)

प्रश्नः चार लोगों ने मिलकर एक दुकान की उनमें से दो उस दुकान पर तनख़्वाह लेकर काम करते हैं क्या ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः जब यह दोनों शरीक हैं तो कारे शिरकत की उज़रत लेना दुरुस्त नहीं है अलबत्ता काम करने की वजह से अगर नफ़ा में कुछ जियादा हिस्सा इन दोनों के लिए तमाम शुरका तजवीज़ करलें तो यह दुरुस्त है, और नफ़ा का ज़ाइद हिस्सा अमले ज़ाइद का बदल हो जायेगा।

प्रश्नः एक किरायेदार मालिके मकान से यह शर्त लगाता है कि जब तक मैं इस मकान में रहूं मुझ से मकान ख़ाली न कराया जाए न किराया बढ़ाया जाये, किरायादार यह शर्तें इसलिए लगाता है कि उसने मालिके मकान को भारी क़र्ज़ दे रखा है क्या ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः मकान ख़ाली न कराने और किराया न बढ़ाने की शर्त सही नहीं है इससे मुआमला किरायेदारी फ़ासिद हो जाता है।

(फतावा हिन्दिया 442/4)

प्रश्नः नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने और पैदा होने वाले बच्चे के कानों में अज़ान व इक़ामत कहने की उज़रत लेना कैसा है?

उत्तर: अस्ल यह है कि इबादत पर उजरत लेना ज़ाइज नहीं है, अलबत्ता फुक़हाये मुतअख्खिरीन ने ज़रूरतन बाज़ इबादात को मुस्तस्ना क़रार दिया है, जैसे दीनी तालीम, पंच वक़्ता नमाज़ों की इमामत और अज़ान देना, इन उमूर की अन्जाम देही की उज़रत जाइज़ है लेकिन इनमें नमाज़े जनाज़ा और बच्चे के कान में अज़ान देने की उज़रत शामिल नहीं है, इसलिए इन उमूर पर उज़रत लेना जाइज़ नहीं है। (दुर्रुल मुख़्तारः 55/6)

प्रश्न: तावीज़ देने या वाज़ कहने की उज़रत लेना कैसा है?

उत्तर: तावीज़ में अगर ख़िलाफे शरअ़ बात न हो बल्कि कुर्आनी आयत लिख कर तावीज़ दी जाये तो इसकी उज़रत लेने की गुंज़ाइश है, इसी तरह अगर वाज़ कहने की मुलाज़मत इख़्तियार की गई और तनख़्वाह मुकर्रर हो तो इसकी उज़रत लेने की इज़ाज़त है।

(रद्दुल मुहतार 76/9)

प्रश्न: रबीउल अव्वल के महीने में बहुत से मुस्लिम इलाक़ों और शहरों में सीरत कानफ्रेंस और जल्से होते हैं, जिनमें उलमा की तक़रीरें होती हैं और सीरते पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़तलिफ पहलुओं पर रौशनी डाली जाती है, क्या शरअ़ में उसकी गुंजाइश है?

उत्तर: गैरों की तरह बर्थडे के मख्सूस अंदाज और तरीके में कान्फ्रेंस और जल्से करना इस्लामी शरअ़ में पसन्दीदा नहीं है, अलबत्ता उनमें अगर गैर इस्लामी तरीका न हो और न ही इसराफ (अपव्यय) हो तो सीरते रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखतलिफ पहलुओं को लोगों के सामने बयान करना बिला शुब्हा दुरुस्त है और बाइसे अज्र व सवाब है। (फतावा हदीसीया)

प्रश्न: रबीउल अव्वल के महीने में हिन्दोस्तान के बाज़ शहरों में जुलूसे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निकलता है, जिस में मखसूस अंदाज़ इख्तियार किया जाता है, इस जुलूस का मक्सद एक तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अजमत और शाने नुबूवत का इजहार है और दूसरा मक्सद लोगों में दीनी रुजहान पैदा करना होता है, क्या इस तरह का जुलूस निकालना दुरुस्त है और क्या यह बाइसे अज्र व सवाब है?

उत्तर: जुलूसे मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस अंदाज और तरीके से निकाला जाता है, किताब व सुन्नत, सहाबा किराम और सुन्नते सलफे सालिहीन में उसका वजूद नहीं मिलता है, इसमें झण्डे होते हैं, नारे लगाये जाते हैं। बाज़ बाज़ मुकामात पर नंगे सर और नंगे पैर चलते हैं, अखीर शब में फूलों का हार ले कर जाते हैं, कुछ देर बिल्कुल खामोश बा अदब खड़े हो कर यह तसव्वुर लिए होते हैं कि अभी आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश हो रही है और यह हार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में पेश करने के लिए हैं, जाहिर बात है कि उन चीज़ों का अहद नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अहद सहाब रज़ि0 और सलफे सालिहीन के दौर में वजूद नहीं मिलता है, इसलिए इस किस्म के जुलूस

का निकालना गैर शरई अमल है जो बाइसे अज्र व सवाब नहीं। (हवाला साबिक)

प्रश्नः एक शख्स ने शहर के ऐसे हिस्से में मदरसा काइम किया है जहां अहले बिदअ़त रहते हैं, उनका मक्सद है कि उनसे तअल्लुकात बना कर बच्चों को मदरसा ला कर उनकी तालीम व तरबीयत की जाये और उस राह से बिदअ़त की इस्लाह की जाये, 12 रबीउल अव्वल और मुख़्तलिफ मवाके से उनके प्रोग्राम होते हैं, जो अमूमन बिदअ़ात व खुराफात से भरे होते हैं, क्या अहले बिदअ़त के प्रोग्रामों में शिरकत दुरुस्त है, अगर शरीक नहीं होते हैं तो वह अपने बच्चों को मदरसा में आने से रोक देंगे, क्या दावत और इस्लाह के मक्सद से ऐसा किया जा सकता है?

उत्तरः मदरसे के मसालेह और मफाद के पेशे नज़र अहले बिदअ़त के प्रोग्रामों में शिरकत दुरुस्त नहीं है, हाँ उन प्रोग्रामों में शरीक हो कर हिक्मत व दानाई के साथ खुद उन बिदअ़ात की इस्लाह की कोशिश हो जो उन प्रोग्रामों और उनके मुआशरा में हुआ करती हैं तो उसकी गुंजाइश है, सिर्फ बच्चों को मदरसा में लाने की गरज़ से शिरकत की इजाजत नहीं होगी।

(इस्लाहुर्रुसूमः 116)

प्रश्नः क्या ईमान के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत ज़रूरी है?

उत्तरः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत ईमान के लिए ज़रूरी है, नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई उस वकत तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसके नज़दीक उस की जान, वालिदैन, औलाद और तमाम लोगों से जियादा मैं महबूब न हो जाऊँ।

(सहीह बुखारी)

प्रश्नः ईमान के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अक्ली महब्बत काफी है या फित्री महब्बत ज़रूरी है? क्यों कि बाज लोगों का खयाल है कि फित्री महब्बत माँ–बाप और औलाद से हो सकती है दूसरे से नहीं, क्या यह खयाल दुरुस्त है?

उत्तरः ईमान का अदना दर्जा यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत अक्ली तौर पर हो और आला दर्जा यह है कि यह महब्बत फित्री हो, फित्री महब्बत चूंकि इख्तियार में नहीं होती इसलिए उसे ईमान के लिए ज़रूरी क़रार नहीं दिया जा सकता। मुल्ला अली कारी रह0 ने "किसी का ईमान उस वक्त तक साबित नहीं हो सकता जब तक वह मुझे हर चीज़ से ज़ियादा न चाहे" वाली हदीस की शरह (व्याख्या) में यही लिखा है। (शरह मिरकातः 139) अलबत्ता कमाले ईमान यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत फित्री हो हज़रत शाह वलीउल्लाह रह0 ने भी यही लिखा है।

प्रश्नः एक शख्स स्कूटर भी चलाता है, कार भी ड्राइव करता है बग़ैर छड़ी के चलता फिरता है, मगर नमाज़ वह मुस्तकिल कुर्सी पर बैठ कर पढ़ता है, क़याम भी बैठ कर करता है, उज़्र कोई आप्रेशन, कोई चोट और डॉक्टर की हिदायत बताता है। इसमें कोई हरज तो नहीं।

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	—	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	—	मासिक
सम्पादक	—	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	अहाता दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	—	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	—	भारतीय
पता	—	21—अदनान पल्ली निकट, हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	—	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

उत्तर: तजरिबाकार मुस्लिम डॉक्टर का अगर मशवरा हो कि कुर्सी के बगैर नमाज़ पढ़ने में नुक्सान है तो नुक्सान से बचने के लिए कुर्सी पर नमाज़ पढ़ने की गुंजाइश होगी।

प्रश्न: किसी लड़की का निकाह कुछ तोले सोने के महर पर हुआ उसे निकाह के वक़्त ही महर के मुताबिक़ ज़ेवर मिल गया मगर बाद में उसके शौहर ने वह ज़ेवर बैंक लाकर में मुशतरिका एकाउन्ट के तहत रख दिया, अब वह ज़ेवर लड़की के इस्तेमाल में नहीं है, लाकर की चाबी शौहर के पास है, लड़की ज़कात देना चाहती है तो शौहर ने कहा कि मेरे दिये हुए जेब खर्च से ज़कात न देना, लड़की कोई मुलाज़मत नहीं करती तो क्या वह मैके से रक़म लेकर ज़कात अदा करे? और अगर उसके सुसराल या मैके वाले ज़कात अदा करने के लिए रकम न दें तो क्या लड़की गुनहगार होगी?

उत्तर: बैंक लाकर से ज़ेवरात लाना मुम्किन हो और उसमें से ज़कात अदा करने का इम्कान हो तो जेवरात के कुछ हिस्से को बेच करके ज़कात अदा करेगी वरना गुनहगार होगी, लेकिन अगर लॉकर से जेवरात नहीं ला सकती है और शौहर उसकी भी इज़ाज़त न दे और न ही ज़कात अदा करने की कोई सबील हो तो ऐसी सूरत में औरत गुनहगार नहीं होगी।

❖❖❖

इन्सान की पैदाईश के विभिन्न चरण

—इं0 जावेद इक़बाल

लगभग 1400 साल पहले जब खुदा ने जिब्राईल फ़रिश्ते के माध्यम से कुर्आन को एक पैगाम और मार्गदर्शन के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को सिखाया था, तब दुन्या ने वैज्ञानिक दृष्टि से कायनात की हक़ीकतों को समझना नहीं सीखा था। उस ज़माने में इंसानों को स्वयं अपने शरीर के भीतर के रहस्यों का भी कोई ज्ञान नहीं था। अल्लाह तआला ने कुर्आन पाक में उसी समय यह भी कह दिया था कि "निकट भविष्य में हम उन्हें अन्तरिक्ष मे अपनी निशानियां दिखायेंगे और खुद उनके शरीर में भी इतना खोल कर (स्पष्ट), कि उन्हें पता चल जायेगा कि हक़ीक़त (सत्य) तो यही है"। (सूरः सजदा 41:53)

वर्तमान काल में विज्ञान के विकास के बाद वैज्ञानिक दृष्टि से सोचने समझने वाला, इन्सान अल्लाह तआला के इस वायदे को सत्य होता देख रहा है। धरती आकाश और उनके मध्य प्रत्येक रचना के विषय में जो जानकारियां 1400 वर्ष पहले इतने सरल शब्दों में दी गई थीं कि उस समय के इंसान को भी समझना कुछ कठिन न था और आज का इंसान भी उन्हीं सरल शब्दों की गूढ़ता को वैज्ञानिक दृष्टि से सत्य सिद्ध होता देख रहा है।

इस समय हम इन्सान की पैदाइश के रहस्यों का अध्ययन कुर्आन के प्रकाश (शब्दों) में कर रहे हैं जिनको विज्ञान मात्र दो तीन सौ वर्ष पहले ही समझ पाया है।

कुर्आन पाक में फरमाया गया है "और हमने इन्सान को मिट्टी के सत (सुलालह, Extract) से बनाया फिर हमने उसे (मिट्टी के सत को) नुतफ़ह (वीर्य, टपकी हुई बूँद) का रूप दे कर एक सुरक्षित स्थान में जमा दिया, फिर उस वीर्य की बूंद को हमने अलक़ह बनाया, फिर हमने उस अलक़ह को मुज़गह बना दिया, फिर मुज़गह को इज़ामा बना दिया, फिर हमने इज़ामा पर मांस चढ़ा दिया, फिर हमने उसे एक अन्तिम रूप दे कर पैदा किया। वास्तव में अल्लाह बड़ी बरकत वाला (महिमावान) सर्वश्रेष्ठ रचयिता है। फिर इसके बाद तुम अवश्य ही मरोगे। फिर तुम अवश्य ही क़यामत के दिन पुनः उठाए जाओगे।

(कुर्आन 23:12–16)

संदर्भित आयत (23:12–16) में इंसान की पैदाइश के छः चरण (Stage) बयान किए गए हैं। सर्वप्रथम सारंशतः बताया कि इंसान को हमने मिट्टी से सत (सुलालह, Extract) से बनाया है"। ग़ौर करें यह कितना उचित शब्द है उस मोती जैसी मूल्यवान बूँद के लिए जिसे आगे चल कर "नुतफ़ह" यानि टपकी हुई बूंद अर्थात वीर्य कहा गया है। इंसान जिस चीज़ को भी खाता पीता है, वे सब मिट्टी से ही निकलती हैं, उनके खाने पीने से विभिन्न प्रकार के तत्व लोहा, चूना, कार्बन, मैगनीशियम, फ़ासफ़ोरस आदि शरीर में जा कर उसके

विकास (Groth) का सबब बनते हैं, उन्हीं से खून बनता है, हड्डियां, मांसपेशियां और वीर्य आदि बनता है। वीर्य कितना बहुमूल्य है, बस इससे समझ लीजिए कि जब सौ बूंद खून जलता है तब एक बूंद वीर्य बनता है, अतः वीर्य को 1400 वर्ष पहले मिट्टी के सत की संज्ञा देना बहुत बड़ा रहस्योघाटन था जो सृष्टि का रचयिता ही कर सकता था।

फिर आगे बताया कि हमने उस टपकी हुई बूंद (वीर्य) को एक "सुरक्षित स्थान" में रख दिया। यह सुरक्षित स्थान वर्तमान काल की जीव विज्ञान (Embryology) की भाषा में OVUM (अंडाशय) है। पुरुष के वीर्य में लाखों कोशिकायें (Cells) होती हैं जिन्हें Sperm कहते हैं। इनका आकार लम्बाई लिए हुए होता है जिसकी मोटाई लगभग 1/100 मिली मीटर होती है। सर्व प्रथम सन् 1677 में हाम और लीनहाक (Hamm & Leeuwenhoek) नाम के दो वैज्ञानिकों ने उच्च स्तर की दूरबीन से इन कोशिकाओं को देखा था, और उन्होंने केवल इन कोशिकाओं को ही इंसान का बहुत छोटा स्वरूप समझ कर इंसान की पैदाईश का सबब मान लिया था, इसके बाद लगभग दो सौ वर्ष तक कई वैज्ञानिकों ने अपने अपने दृष्टिकोण से इन्सान की पैदाईश के रहस्य को समझना चाहा। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व, इस रहस्य को अरनस्ट हैकल (Ernst Hackel) के द्वारा पूरी तरह समझा जा सका है। इस विषय पर डॉ0 हैकल की किताबें Natural History of Creation और Evolution of Man बहुत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान की खोज के अनुसार पुरुष के Sperm की तरह महिला की कोशिकाओं को OVUM कहते हैं यह गोलाकार होता है इसका व्यास लगभग 1/10 मिली मीटर होता है। इसके बीच में बहुत छोटा एक छेद जैसा गड्ढ़ा होता है। स्त्री और पुरुष के मिलने पर Sperm Cells, Ovum Cells की ओर तेज़ी से बढ़ते हैं मगर कोई एक Sperm Cell ही किसी एक Ovum Cell में प्रवेश कर पता है शेष सभी Cell नष्ट हो जाते हैं। प्रवेश पाया हुआ Sperm Cell, Ovum Cell मे पूर्ण विश्राम अवस्था में बैठ जाता है। कुर्आन में अल्लाह तआला ने इसी अवस्था को "फ़ी क़रारिम, मकीन" के सरल शब्दों में समझाया है। Sperm और Ovum कोशिकाओं के इस जोड़े को जीव विज्ञान की भाषा में Embryo कहते हैं।

अब शिशु के बनने का काम शुरु हो जाता है संदर्भित आयतों में कुर्आन कहता है कि फिर उस बूंद को हमने "अलक़ह" बना दिया। अरबी शब्द 'अलक़ह' के तीन अर्थ हैं। (1) जोंक (Leech) (2) लटकती हुई चीज़ (3) ख़ून की फुटकी (Blood Clot), वर्तमान काल की वैज्ञानिक रिसर्च ने Embryo की इन तीनों ही हालतों की पुष्टि की है। इस अवस्था में Embryo गर्भावस्था में जोंक की तरह चिपका होता है

और माँ के खून से अपना आहार चूसता है, ठीक वैसे ही जैसे जोंक दूसरे प्राणी का रक्त चूस कर ज़िन्दा रहती है। लगभग 15 दिन में ख़ून चूस कर लगभग 0.6 मिली मीटर का हो जाता है जो गर्भाशय में लटकने लगता है। लटकती हुई दशा में दूसरी ओर से देखने पर यह जमे हुए खून की फुटकी जैसा दिखाई देता है।

कुर्आन की संदर्भित आयतों में फ़रमाया गया है कि फिर हम उस "अलक़ह" को "मुज़ग़ह" बनाते हैं। अरबी भाषा में "मुज़ग़ह" शब्द के अर्थ होते हैं चबाई हुई चीज़, अलक़ह जब दो सेंटीमीटर लम्बा हो जाता है तो यह लिजलिजे केंचवे के रूप में होता है, अब यह एक बोटी की तरह सख़्त हो जाता है, एक ओर दांतों के जैसे निशान होते हैं, जैसे चिविंगम को चबाने से उस पर बन जाते हैं। यह तस्वीर वर्तमान काल में अत्यंत शक्तिशाली माइक्रोस्कोप द्वारा ली गई है। 1400 वर्ष पूर्व भ्रूण (Embryo) की इन अवस्थाओं का ज्ञान हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को कैसे हुआ जब कि वे अंश मात्र भी साक्षर न थे। प्रोफेसर मूरे ने 1981 में दम्माम, सऊदी अरब की सातवीं मेडिकल कानफ्रेंस में कहा था कि निश्चित ही कुर्आन अल्लाह का कलाम है, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि इंसान की पैदाईश के यह रहस्य अल्लाह तआला ने ही हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को बताये थे।

फिर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हमने मुज़ग़ह को 'इज़ामा' बना दिया अर्थात हड्डियों का रूप दिया। बोटी जैसी चीज़ में हड्डियां बननी शुरु हो जाती हैं, सबसे पहले रीढ़ की हड्डी बनती है फिर सर की गोलाई और अन्य हड्डियां बनती हैं। विकास के इस चरण को "इज़ामा" की संज्ञा दी गई है।

फिर फरमाया कि हमने इस 'इज़ामा' पर गोश्त चढ़ा दिया। इस अवस्था में शिशु की शक्ल किसी जानवर जैसी होती है जो विकसित हो कर बन्दर जैसी दिखाई पड़ती है। इसके दुम भी होती है। अब अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि "हमने उसे अन्तिम रूप दे कर पैदा किया"।

स्पष्ट है कि जो बच्चा पैदा होता है वह सुन्दर इंसान की सूरत होता है, न उसके दुम होती है, न उसकी शक्ल बन्दर जैसी होती है। इस प्रकार मिट्टी का सत छः विभिन्न चरणों से गुज़र कर इंसान के रूप में दुन्या में आता है। यह अल्लाह की अद्भुत सर्वश्रेष्ठ कारीगरी है।

इन सब विषयों को www.islam-guide.com की वेबसाइट पर विस्तार से देखा जा सकता है।

❖❖❖

सच्चा राही पन्द्रहवें ..... का प्रसारण करें। अल्लाह तआला हम सबको इस्लाम पर जमाए रखे और जब अन्तिम समय आए तो ईमान पर अंत करे आमीन।

अंत में हम अपने पाठकों से अपनी भूल चूक की क्षमा चाहते हैं और फिर पुनः अनुरोध करते हैं कि सच्चा राही के खरीदार बढ़ा कर सवाब प्राप्त करें।

❖❖❖

हमारे लिए नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अनुकरण अनिवार्य है

—मौलाना शमसुलहक़ नदवी

रबीउल अव्वल के महीने में और उसके बाद भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी (सीरत) पर जल्सों और तकरीरों का सिलसिला जारी रहता है और जारी रहना चाहिए इसलिए कि इन जल्सों और तकरीरों से लोगों को नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़ीवनी के बारे में विस्तृत जानकारी होती है और उन को लोग अपने जीवन में चालित करने का प्रयास करते हैं और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से महब्बत तथा आस्था में वृद्धि होती है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी मानवता के लिए पथ प्रदर्शक बन कर आए थे, शैतान की पार्टी ने आपका भरपूर विरोध किया, शैतान ने लोगों को आपका दुशमन बना दिया, दुशमनी में लोगों ने क्या कुछ न किया परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की मदद से अपने मिशन पर पहाड़ की तरह जमे रहे, विरोधियों को अपने आचरण से प्रभावित किया आपने पथ प्रदर्शन के कार्यों में कोई कमी न आने दी, हिज्जतुल वदाअ (वदाई हज) के अवसर पर लोगों को तमाम आवश्यक हिदायत (निर्देशों) के पश्चात पूछा "क्या मैंने अल्लाह के आदेशों को पहुंचाने का काम पूरा कर दिया? सहाबा रज़ि0 ने कहा निःसंदेह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपना पूरा फर्ज अदा कर दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा "हे परवर दिगार तू इन लोगों के इक़रार (स्वीकार) पर साक्षी रह, ताकि यह कियामत के दिन अपने इस इकरार का इन्कार न कर सकें"।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सबसे उज्जवल पहलू यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने अनुयायियों को जो निर्देश दिया है उस पर सबसे पहले स्वयं चल कर दिखाया। पवित्र कुर्आन में ऐसे लोगों की प्रशंसा की है जो खड़े, बैठे, लेटे अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसकी अमली मिसाल थे, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मन अल्लाह को याद में लगा रहता और ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर रहती है, उठते बैठते, चलते फिरते, लोगों से मिलते जुलते, सवारी पर सवार होते, सफर में आते जाते, कपड़े पहनते उतारते तात्पर्य यह कि हर कार्य पर हर हर कदम पर अल्लाह का जिक्र करते।

हिस्ने हसीन दो सौ पेजों की पुस्तक है यह पुस्तक उन शब्दों और दुवाओं का संकलन है जो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कि विभिन्न पुस्तकों में सुरक्षित हैं। कितने भाग्यवान हैं वह लोग जो उन दुआओं को पढ़ कर और अपने जीवन में अपना कर अल्लाह के प्रिय बन गये।

पवित्र कुर्आन ने आपके आचरण के विषय में बताया कि आप उच्चतर आचरण के

पद पर हैं, पवित्र कुर्आन में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में जो कुछ आया है वह सब आप के जीवन में स्पष्ट रूप से नजर आये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम छोटी छोटी बातों पर लोगों का शुक्रिया अदा करते थे।

आप लोगों की कमज़ोरियों और ऐबों (विकारों) को नहीं ढूंढा करते थे, प्रथम बार आपको जो देखता वह आपके प्रताप से भयभीत हो जाता परन्तु फिर जब वह बार बार गिलता तो आप को बड़ा कृपालू पाता और आपसे प्रेम करने वाला, ईसार (अपने पर दूसरों को लाभ का अवसर देने वाले) का भाषण देने वाले की कमी नहीं, परन्तु क्या उनके कर्मों की सूची में उसका उदाहरण भी मिलता है? परन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जीवनी ईसार का आदर्श है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक व्यक्ति अपनी ज़रूरत के लिए कुछ मांगता है, आपके पास कुछ न था, आप ने मांगने वाले से कहा कर्ज़ ले लो मैं क़र्ज अदा कर दूंगा।

आपके पास चादर न थी एक सहाबिया ने आपको चादर उपहार में प्रस्तुत की, आपने कबूल कर ली उसी समय एक दूसरे सहाबी ने कहा कि कितनी अच्छी चादर है आपने तुरंत उनको चादर भेंट कर दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कथन है कि तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपने घर वालों के लिए अच्छा हो, और मैं अपने घर वालों के लिए सबसे अच्छा हूँ।

आपने अपने आचरण लोगों के साथ किस प्रकार बरता इसे उन लोगों से जानना चाहिए जिन से आपका बराबर साथ रहा, क्या आपके साथियों में से कभी किसी को आपसे दुख पहुंचा? आपका यह भी कथन है तुम में सबसे अच्छा वह है जिसके आचरण अच्छे हों। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई व्यक्ति बात करता तो आप उसकी बात सुनते रहते ज़रा भी न उक्ताते यहां तक कि वह अपनी बात पूरी कर लेता, सिवाए इसके कि वह कोई ग़लत अथवा अनुचित बात कहे, तो उसे रोक देते या वहां से उठ जाते।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सच्चे अमानतदार व्यापारी की बड़ी प्रशन्सा की है, स्वयं व्यापार में उसका आदर्श प्रस्तुत किया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी पर ज़ियादती से रोका है, आपने मुसलमानों की ज़रूरत के लिए एक यहूदी से कर्ज़ लिया, जिस की अदाएगी की एक अवधि थी, यहूदी पहले ही कर्ज़ मांगने आ गया और कर्ज़ मांगने में अनुचित शब्द अपनाए, हजरत उमर रज़ि0 मौजूद थे उन्होंने यहूदी को डांटा, तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ि0 को रोका और कहा, तुम को यहूदी से कहना चाहिए था कि सम्मान के साथ बात करो, और मुझसे कहना चाहिए था कि, यहूदी का कर्ज़ अदा होना चाहिए, यह सहन शीलता का आचरण देखा तो यहूदी ईमान ले आया।

दुशमन पर वश पाने के पश्चात शक्ति तथा बदले का आचरण आम है, संसार के इतिहास के पन्नों को उलट डालिए तमाम विजई

राजाओं ने विजय पा कर अपने विरोधियों से बदला ले के छोड़ा, परन्तु अल्लाह के रसूल को मक्के वालों ने कितना सताया था, घर से बे घर किया था। परन्तु जब मक्का विजय हुआ तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने विरोधियों को क्षमा कर दिया, यहां तक कि अब तक दुश्मनी करने वाले अबू सुफ्यान को जब वह आपके सामने झुक गये तो उनके घर को अम्न (शन्ति देने वाला घर घोषित किया अर्थात जो उनके घर में प्रवेश करेगा वह क्षमा पाएगा। इस सबके साथ आप अल्लाह से इतने डरने वाले थे कि ज़रा तेज़ हवा चले तो आप घबरा जाते और अपने रब से गिड़ गिड़ा कर दुआएं मांगने लगते।

पहली वही जब उतरी तो आप घबरा गये उस समय मुसलमानों की मां हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने आपको आपके आचरण याद दिला कर ढारस देती हैं।

आज हम जल्से करते हैं, आपके आचरण बयान करते हैं हमको चाहिए कि हम समीक्षा करें कि हम आपका कितना अनुकरण करते हैं। यतीमों की मदद, बेवाओं की मदद भूखों को खिलाना, जरूरत मन्दों की ज़रूरतें पूरी करना, तात्पर्य यह है कि हम जहां नमाज़ रोजे अदा करें वहीं ज़कात खैरात से अल्लाह के बन्दों की मदद करें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण अनिवार्य है। इसमें कोताही न करें।

❖❖❖

पढ़ें सच्चा राही

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी, नसीराबादी

हिदायत मिलेगी, पढ़ो सच्चा राही।
शराफत मिलेगी, पढ़ो सच्चा राही।।
लिपि इसकी हिन्दी, पढ़ो सारे हिन्दी।
है जन्नत की कुन्जी, पढ़ो सच्चा राही।
है मालिक खुदा ही, तो सारे जहाँ का।
यही है पढ़ाता, सबक सच्चा राही।।
हम आपस में मिलजुल, रहें सारे मानव।
इसी फिक्र में तुम पढ़ो सच्चा राही।।
कहो बात अच्छी, सुनो बात अच्छी।
इसी मार्गदर्शन में, है सच्चा राही।।
वही एक ईश्वर, वही एक अल्लाह।
उसी की हो पूजा, कहे सच्चा राही।।
जहाँ सब को रहना जहाँ सबको जाना।
दिखाता उसी घर को है सच्चा राही।।
सिद्दीक़ी भी पढ़ता है, अब ध्यान दे कर।
बने दोनों आलम, पढ़ो सच्चा राही।।

❖❖❖

पग-पग ये प्रेम पुष्प लुटाते हुए चलो

—क़मर रामनगरी

ईश्वर का नाम मन में बसाते हुए चलो
भक्ति की भावना को जगाते हुए चलो।

मानव से प्रेम करना ही मानव का धर्म है
हर धार्मिक विभेद मिटाते हुए चलो।

सत्कर्म से विमुख है मानव समाज आज
तुम सत्य की पताका उड़ाते हुए चलो।

इन्सानियत नहीं है जो तुम में तो कुछ नहीं
यह बात हर मनुष्य को बताते हुए चलो।

मानवता का है मार्ग जो दुर्गम तो क्या हुआ
जैसे भी हो क़दम को बढ़ाते हुए चलो।

छाया हुआ है घोर अंधेरा अधर्म का
तुम धर्म-ज्योति परन्तु जलाते हुए चलो।

मानव ये, अब वो पहला-सा मानव नहीं रहा
उसको वह पहला चित्र दिखाते हुए चलो।

सत्मार्ग भूल कर जो भटकते हैं शून्य में
तुम उनको सत्य मार्ग बताते हुए चलो।

सूखा पड़ा हुआ है जो ईमान का चमन
तुम उस चमन में फूल खिलाते हुए चलो।

इन्सानियत का, प्रेम का संदेश सबको दो
भटके हुओं को राह दिखाते हुए चलो

रास्ते में थक के बैठ गये हैं जो पथ-भ्रष्ट
उनको भी साथ ले के चलाते हुए चलो।

सेवा करो हर एक की निःस्वार्थ भाव से
मन से हर एक स्वार्थ मिटाते हुए चलो।

ऊँचा उठो तो ऐसे कि जैसे गगन का चाँद
कण-कण पर अपनी 'ज्योति' लुटाते हुए चलो।

फाहा सहानुभूति का ज़ख़्मों पे रख के तुम
जो रो रहे हों उनको हंसाते हुए चलो।

जो क्रूर हैं कठोर हैं हिंसक पशु समान
उनको भी प्रेम पाठ पढ़ाते हुए चलो।

रिश्वत हो बेईमानी हो या भ्रष्टाचार हो
इन सारे दुर्गुणों को मिटाते हुए चलो।

यह सत्य है कि धर्म भिन्न हैं, मानव तो एक हैं
मानव का मान जग में बढ़ाते हुए चलो।

पतझड़ में भी वसंत का संदेश दो 'क़मर'
पग-पग ये प्रेम पुष्प लुटाते हुए चलो।

कान्ति दिसम्बर 2015 से ग्रहीत

शुभ सूचना

"पवित्र कुर्आन का सरल अनुवाद संक्षिप्त व्याख्याओं सहित"

—द्वारा मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी।

मौलाना बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी अच्छे गुरू, अच्छे लेखक, अच्छे वक्ता, इस्लाम धर्म के अच्छे ज्ञानी, इस्लामिक कर्मो तथा सुन्नतों के अनुकूल जीवन बिताने वाले, इस्लामी समाज में स्वीकृति प्राप्त हर एक के प्रिय हैं! आप हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 के बड़े भाई डॉ0 सैय्यद अब्दुल अली हसनी रह0 के पौत्र हैं अल्लाह आपको सुरक्षित रखे।

वास्तव में यह अनुवाद मौलाना ने "आसान मआनिये कुर्आन मुख्तसर हवाशी के साथ" उर्दू भाषा में लिखा था जो बहुत पसंद किया गया और उसके कई एडीशन निकल चुके हैं। मौलाना ने चाहा कि इसका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो, अतएव अपनी निगरानी में इसका अनुवाद कराया, इस महत्वपूर्ण तथा आवश्यक कार्य को जनाब मौलाना सैय्यद ज़ुबैर अहमद नदवी उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ ने सम्पन्न किया, जिसके लिए वह धन्यवाद के पात्र हैं इसकी कम्पोजिंग, प्रूफरीडिंग तथा प्रकाशन में मौलाना मुहम्मद नफीस खाँ नदवी, सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी, मास्टर मुहम्मद सैफ साहब तथा कमरुज्जमा अंसारी, आदि का सहयोग प्राप्त रहा जिसके लिए सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

अनुवाद की विशेषता:-

हर शब्द का अनुवाद शब्द के निकटतम अर्थ के अनुकूल, सरल तथा वेगवान वाक्यों में है हर पृष्ठ पर जितनी आयतें दी गई हैं उनका अनुवाद तथा सरल, संक्षिप्त और आवश्यक व्याख्या उसी पृष्ठ पर पूरी कर दी गई है। इससे पाठकों के लिए यह सरलता होगी कि वह प्रति दिन एक या दो पृष्ठ पढ़ने का नियम बना सकते हैं।

यह अनुवाद व्याख्या सहित 15x23 से0मी0 के आकार के 610 पृष्ठों पर फैला हुआ है सहयोग राशि मात्र ₹ 450 है छात्रों तथा छूट चाहने वालों के लिए भारी छूट है।

-:मिलने का पता:-

(1) सत्यमार्ग प्रकाशन (अल आफिया आफिस) टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-07

(2) नदवी बुक डिपो, नदवतुल उलमा, लखनऊ।

(3) एहसान बुक डिपो, मकारिम नगर, टैगोर मार्ग, लखनऊ।

(4) शबाब बुक डिपो, टैगोर मार्ग, लखनऊ।

❖❖❖

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये –इदारा

सामने लिखे हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

चिड़िया चूं चूं करती है	چڑیا چوں چوں کرتی ہے
तोता टें टें करता है	طوطا ٹیں ٹیں کرتا ہے
कबूतर गुटर गूँ करता है	کبوتر غٹر غوں کرتا ہے
कोयल कूकती है	کویل کوکتی ہے
मुर्गा कुकडू कूँ बोलता है	مرغا ککڑوکوں بولتا ہے
मुर्ग़ी कटकटाती है	مرغی کٹکٹاتی ہے
कौव्वा काँव काँव करता है	کوّا کاؤں کاؤں کرتا ہے
बकरी मिम्याती है	بکری ممیاتی ہے
भेड़ भें भें करती है	بھیڑ بھیں بھیں کرتی ہے
गाय रम्भाती है	گائے رمبھاتی ہے
बैल ड़करता है	بیل ڈکرتا ہے
भैंस डकराती है	بھینس ڈکراتی ہے
बिल्ली मियाऊँ मियाऊँ करती है	بلّی میاؤں میاؤں کرتی ہے
शेर दहाड़ता है	شیر دہاڑتا ہے
हाथी चिंघाड़ता है	ہاتھی چنگھاڑتا ہے
सियार हुवाँ हुवाँ करता है	سیار ہواں ہواں کرتا ہے
गधा रेंकता है	گدھا رینکتا ہے
घोड़ा हिनहिनाता है	گھوڑا ہنہناتا ہے
कुत्ता भौंकता है	کتّا بھونکتا ہے
कुत्ता गुर्राता है	کتّا غرّاتا ہے
कुत्ता रोता है	کتّا روتا ہے
साँप डस्ता है	سانپ ڈستا ہے
बिच्छू डंक मारता है	بچھو ڈنک مارتا ہے
ऊँट बलबलाता है	اُونٹ بلبلاتا ہے